तृतीय अध्याय

आलोच्य कहानियों में चित्रित वेश्या जीवन

: तृतीय अध्याय :

``आलोच्य कहानियों में चित्रित वेश्या जीवन``

विषय प्रवेश :-

साधारणतया नारी द्वारा किसी चीज की अपेक्षा लेकर किया जानेवाला `देह-व्यापार` वेश्यावृति कहलाता है। `वेश्यावृत्ति` समाज का कोढ़ है परंतु वेश्यावृत्ति की समाज को इतनी ही जरूरत है जितनी शहर की गंदगी बाहर फेंकने के लिए बड़े-बड़े गटारों की होती है। वेश्याओं के कारण समाज का नैतिक पतन होता है, यह बात अगर सही है तो यह भी मानना होगा कि वेश्याओं के कारण समाज का नैतिक पतन कम होता है। तात्पर्य यह कि वेश्याएँ अगर न होती तो वासनाओं से भ्रष्ट समाज के असमाजिक तत्वों के कारण घर की बहू-बेटियों को घर से बाहर निकलना मुश्किल होगा। एक तरह से वेश्याएँ कुलीन घरों की बहू-बेटियों की तथा समाज में स्थित इज्जतदार समझी जानेवाली महिलाओं की इज्जत का सुरक्षा कवच ही है।

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक वेश्यावृत्ति का व्यवसाय वृद्धिंगत होता दिखाई देता है। प्राचीन काल में भी वेश्याओं की स्थिति वर्तमान काल से भिन्न नहीं थी। परंतु उसका स्वरूप वर्तमान काल में बदल जरूर गया है। आज की तरह प्राचीन युग में भी वेश्याओं को घृणित समझा जाता था। वेश्यावृत्ति को समाज के माथे का कलंक समझा जाता है। फिर भी इतने प्रयासों के बावजूद भी आजतक वेश्यावृत्ति को बंद करने में किसी व्यक्ति, संस्था या देश को सफलता नहीं हासिल हुई है। शायद दुनिया का कोई भी ऐसा देश नहीं जहां वेश्यावृत्ति नाम मात्र भी नहीं है।

प्राचीन काल में वेश्याओं में `गणिका` एक ऐसी वेश्यानारी थी, जिसे राजाश्रय प्राप्त था। यह गणिका नृत्य और कला से राजदरबार में स्थित राजा तथा बड़े-बड़े सामंतों को खूश करके अपने को धन्य समझती थी। इन गणिकाओं को समाज में एक उच्च स्थान प्राप्त था। राजा के द्वारा इन्हें मानदेय के रूप में एक निश्चित धनराशी प्राप्त होती थी। परंतु उस युग में भी `वारांगना` जो कि वेश्या का एक प्रकार

माना जाता था, को अपना देह-विक्रय करके धनसंचय करना पड़ता था। ऐसी वारांगनाओं को समाज में कोई स्थान नहीं था, उन्हें हीन समझा जाता था।

समाज विज्ञान कोश के अनुसार -प्राचीन काल में वेश्याओं के तीन वर्ग माने जाते थे -

1. दासी - पुरूषों की सेवा करनेवाली स्त्री।

2. गणिका-नृत्य गायन में कुशल व चतुर ऐसी उच्च श्रेणी में आनेवाली वेश्या और

3. पण्य स्त्री-हर दिन अनन्य पुरूषों की भोग्या बनकर धन कमाने वाली स्त्री।

वर्तमान काल में वेश्याओं की संख्या में बहुत ही वृद्धि हुई है। देहातों में वेश्यावृत्ति तो चलती है परंतु उसका स्वरुप शहरों, महानगरों से अलग है। देहातों में इस तरह का व्यवसाय छुप-छुपकर किया जाता है। इस तरह का व्यवसाय देहातों में साधारणत: वह नारी करती है जो धार्मिक कारणों से वेश्यावृत्ति करने पर मजबूर होती है। महाराष्ट्र में भगवान खंडोबा की `मुरली` (मुरळी), यलम्मा की `जोगतिन` आदि भगवान के नाम पर जीनेवाली युवतियाँ अपना पेट पालने के लिए तन का व्यापार करती है। प्राचीन काल में मुरळी और जोगतिनों को एक विशेष प्रकार का सामाजिक महत्व तथा अधिकार था। ऊपर निर्दिष्ट भगवान की सेवा इन्हीं के जिम्में थी। उसके उपलक्ष्य में मंदिरों को दिया जानेवाला धन वे अपनी जीविका के लिए प्रयोग कर सकती थी। वर्तमान समय में जबकि देवालयों के उत्पादन के साधन नहीं रहे और धार्मिक अंधविश्वास के कारण ईश्वर को समर्पित इस नारी को अपनी जीविका के लिए तन का व्यापार करना पड़ रहा है।

महानगरों तथा शहरों में वेश्या व्यवसाय खूले तौर पर किया जाता है। शहरों में ऐसी स्त्रियों का शहर से अलग बसेरा होता है। वही उनका व्यवसाय चलता है। घर से भागी युवतियाँ, कुँवारी माताएँ, प्रेम में असफल युवतियाँ, आर्थिक विपन्नता से त्रस्त नारियाँ तथा किसी द्वारा बेची गई युवतियाँ, व भौतिक सुख-सुविधाओं को भोगने की इच्छा रखनेवाली युवतियाँ शहरों व महानगरों में वेश्यावृत्ति करती हैं। इन वेश्याओं को किसी अन्य व्यक्ति द्वारा बलात् यह व्यवसाय करने पर मजबूर किया जाता है। उन्हें खाने के लिए खाना तथा ग्राहकों के समय अच्छे कपड़ों के अलावा अल्प मात्रा में धन दिया जाता है। कुछ वेश्याएँ अपना अलग व्यवसाय भी नगरों में करती पाई जाती हैं। यह वेश्याएँ ग्राहकों को किसी होटल में

ले जाकर मूल्य लेकर अपना तन बेचती है। तात्पर्य शहरों और महानगरों में वेश्याओं की तादाद बड़ी मात्रा में पाई जाती है।

`सारिका` पत्रिकाओं में इन वेश्याओं के जीवन पर प्रकाश डालनेवाली कहानियों में वेश्यावृत्ति स्वीकारने के कारण, तथा वेश्यावृत्ति करनेवाली नारियों का चित्रण किया गया है। अत: हम प्रारंभ में शब्दकोशों और विद्वानों के द्वारा `वेश्या` शब्द को किस प्रकार परिभाषित किया है इसे देखने का प्रयास करेंगे।

वेश्यावृत्ति : अर्थ एवं परिभाषाएँ :-

अनेक विद्वानों ने अपने-अपने विचार के अनुसार वेश्या की परिभाषाएँ दी हैं। उन परिभाषाओं को नीचे उद्धृत किया गया है -

(1) **`हिंदी विश्वकोश` :-**

``परपुरूषगामिनी स्त्री साधारणत: वेश्या कह कर पुकारी जाती है।``[1]

अर्थात जो स्त्री पर पुरूष के साथ यौन संबंध रखती है वह वेश्या कहलाती है।

(2) `हिंदी शब्दकोश` (राजपाल):-

``धन लेकर लोगों से संभोग करानेवाली स्त्री।``[2]

(3) `हिंदी शब्दसागर` :-

``वह स्त्री जो नाचती गाती और धन लेकर लोगों के साथ संभोग कराती हो। गाने और कसब कमानेवाली औरत।``[3]

(4) `मानक हिंदी कोश` :-

``ऐसी स्त्री जो धन लेकर लोगों के साथ संभोग करने का व्यवसाय करती हो।``[4]

``आज-कल ऐसी स्त्री जो उक्त प्रकार का व्यवसाय करने के सिवा लोगों को रिझाने के लिए नाच गाने का भी काम करती हो।``[5]

`हिंदी शब्दसागर` व `मानक हिंदी कोश` से यह ज्ञात होता है कि जो स्त्री नाचगाने से पुरुषों को रिझाने के साथ-साथ धन कमाने के लिए अपना तन बेचने का व्यवसाय भी करती है वेश्या है।

(5) `नालन्दा विशाल शब्दसागर` : -

``वह स्त्री जो गाने-बजाने तथा धन लेकर संभोग करने का काम करती हो।``[6]

प्रस्तुत परिभाषा में भी वही विचार प्रतिपादित किया है जो ऊपर निर्दिष्ट परिभाषाओं में मिलता है।

(6) `भारतीय संस्कृतिकोश` :-

``किसी भी काम पीड़ित पुरूष से धन लेकर उसे अपने शरीर को भोगने देनेवाली स्त्री को वेश्या, वारांगना या गणिका कहा जाता है।``[7]

प्रस्तुत परिभाषा के अन्तर्गत `कामपीडित पुरूष` शब्द का प्रयोग अलग से किया है, इसके अतिरिक्त परिभाषा उपरोक्त परिभाषाओं से अलग नहीं है।

(7) भारत ससकर द्वारा पारित ``स्त्री तथा कन्याओं के अनैतक व्यापार निरोधक अधिनियम (1956)`` : -

``वेश्या वह स्त्री है जो धन अथवा वस्तु के बदले अवैध यौन संबंधों के लिए अपना शरीर अर्पित करती है। इस प्रकार अवैध संबंध के लिए शरीर को अर्पित करना ही वेश्यावृत्ति है।``[8]

इस परिभाषा में सिर्फ वस्तु अथवा धन लाभ के लिए शरीर विक्रय करनेवाली नारी को वेश्या कहा है। परंतु कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी होती हैं जो धन व वस्तु के लोभ में वेश्यावृतित नहीं करती बल्कि कामवासना से पीड़ित होकर या रंगीन स्वप्नों की पूर्ति करने के हेतु भी वह एक से अनेक पुरुषों के साथ यौन संबंध स्थापित करती है। तात्पर्य यह भी परिभाषा पूर्णरूप में नहीं लगती।

(8) ज्याफ्रे :-

``वेश्यावृत्ति को किसी स्त्री द्वारा एक ऐसे आदतन अथवा बार-बार स्थापित किये जानेवाले यौन-सम्बन्धों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो आर्थिक लाभ के लिए स्वच्छंदतापूर्वक किये जाते हैं।``[9]

ऊपर निर्दिष्ट सभी परिभाषाओं पर विचार-विमर्श करने पर स्पष्ट होता है कि वेश्यावृत्ति करनेवाली स्त्रियाँ धन कमाने के लिए ही वेश्यावृत्ति करती हैं। परंतु सही माने में सभी वेश्या सिर्फ धन या उपहार प्राप्ति हेतु वेश्यावृत्ति नहीं स्वीकारती हैं। अत: कोई भी परिभाषा पूर्ण रूप से सही नहीं कही जा सकती। वेश्यावृत्ति की व्यापकता तथा सूक्ष्मता को जानने के बाद हम इस व्यवसाय को पूरी तरह से परिभाषित नहीं कर सकते, क्योंकि इस व्यवसाय के सभी पहलुओं का समावेश परिभाषा के अंतर्गत लाना या उन पहलुओं को परिभाषित करना कठिन है। फिर भी अध्ययन और उपरोक्त परिभाषाओं को आधार बनाकर हम वेश्या की परिभाषा इस प्रकार कर सकते हैं -

``वेश्यावृत्ति स्त्री द्वारा चलाया जानेवाला ऐसा व्यवसाय है जिसमें स्त्री अपने देह के बदले धनार्जन करती है, तथा अपनी कामतृप्ति के लिए एक से अनेक पुरूषों के साथ यौन संबंध रखती है। ऐसी स्त्री को हम वेश्या कहते हैं। जो इस व्यवसाय को चलाती है चाहे वह खूशी से व्यवसाय करती हो या मजबूरी से।``

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययनोपरांत वेश्यावृत्ति के निम्नलिखित तथ्य सामने आते हैं ़

1. धन तथा उपहार के लिए पर पुरुष से संबंध रखना।

2. स्वच्छंदता तथा अवैध रूप से यौन संबंध रखना।

3. इन अवैध संबंधों में आंतरिक प्रेम तथा सहानुभूति का अभाव रहता है।

4. इस व्यवसाय में स्त्री की दृष्टि पुरूषों के धन तथा पुरूषों की दृष्टि स्त्री के मांसल सौंदर्य पर होती है।

5. वेश्याएँ मात्र धन कमाने के लिए ही वेश्यावृत्ति नहीं करती वरन् वह अपनी यौन तृप्ति के लिए भी एक

से अनेक पुरुषों के साथ यौन संबंध रखती है।

वेश्यावृत्ति का स्वरुप :-

क. प्राचीन और मध्यकाल में वेश्यावृत्ति :-

प्राचीन काल में वर्तमान काल से वेश्याओं की स्थिति अच्छी थी। उनका कलावती स्त्री, वार स्त्री, गणिका वेश्या आदि प्रकारों में विभाजन किया जाता था। उपरोक्त तीनों शब्द समान अर्थोंवाले लगते हैं परंतु `वार स्त्री` और `वेश्या` की अपेक्षा गणिका का स्थान उच्च समझा जाता था। प्राचीन काल में गणिकाएँ राजदरबार में राजा और दरबारी लोगों का दिल बहलाने का काम करती थी। गणिका अनेक कलाओं को साध्य करनेवाली स्त्री को ही कहा जाता था। उसने नृत्य, गायन, वादन, संभाषण पटुता आदि कलाओं को आत्मसात किया होता है। ऐसी वेश्याएँ (गणिका) राजदरबार में अपना एक उच्च स्थान प्राप्त करती थी।

``प्राचीन काल में राजदरबार में नृत्य-गायन करने के लिए ऐसी गणिकाएँ रखी जाती थीं। इस काम के बदले उसे एक हजार पण इतना वेतन मिलता था।``[10] तात्पर्य यह कि प्राचीन काल में गणिका (वेश्या) अपने कला और कौशल के कारण राजा-महाराजाओं के दरबार में आश्रय पाती थी। ऐसी गणिकाओं को राजदरबार में एक विशेष महत्त्व था इस बात को नाट्यशास्त्र में निम्न प्रकार से बताया है -

``पूजिता च सदा राजाज्ञ गुणवद्भिश्च संस्तुता।

प्रार्थनीयाभिगम्या चलक्ष्यभूता च जायते।।``[11]

अर्थात गणिका राजाके द्वारा सन्मानित, गुणीजनों द्वारा प्रशंसित की जाती थी। वह प्रार्थनीय, अभिगम्य और चिंतन करने योग्य या आँखों के सामने रखने योग्य थी।

वेश्याभिसारिका और गणिकाभिसारिका ये सामान्यत: अभिसारिका के दो भेद बताएँ है। वेश्या यह केवल धन कमानेवाली और अधम नायकों के लिए तन का व्यापार करने वाली समझी जाती थी। इस कारण उसे गणिकाभिसारिका से हीन समझा जाता था। गणिका एक विद्वान तथा

कलागुणों से युक्त होती थी इस बात को भरत ने अपने `नाट्य शास्त्र` में बताया है -

``प्रियवादी प्रियकथा स्फुटा दक्षा जितश्रमा।

एभिर्गुणैस्तु संयुक्ता गणिका परिकीर्तिता।``[12]

अर्थात प्रिय वचन बोलनेवाली, प्रिय कथा कहने वाली, स्पष्ट बात करने वाली, प्रियतम की कृपा-दृष्टि पाने में सक्षम जो कभी थकती नहीं अर्थात किसी भी तरह से प्रेमी को विरस नहीं होने देती आदि गुणों की स्त्री गणिका है। इस बात से स्पष्ट है कि गणिका वह स्त्री समझी जाती थी जो अपने कला-गुणों के द्वारा राजा-महाराजाओं का आश्रय संपादन करती थी, राजा-महाराजाओं को अपनी कला से खुश करने का कर्म करती थी। इसी कारण गणिकाओं को अपनी जीविका चलाने के लिए एक निश्चित धनराशी राजा द्वारा प्राप्त होती थी, अत: उनके सामने धनार्जन हेतु तनविक्रय करने की समस्या नहीं थी। प्राचीन काल में गणिकाओं की आर्थिक स्थिति अच्छी थी। परंतु उस समय भी आज की तरह देह-व्यापार करनेवाली वेश्याएँ प्रत्येक नगरों में अपना तन बेचकर धन कमाती थी। ``समाज में सामान्य पुरुषों की कामतृप्ति करनेवालो सैकडों वारयोशिताएँ प्रत्येक नगर में थी। उनकी बस्ती अलग थी। ऐसा दिखाई देता है कि उस समय वेश्याव्यवसाय बहुत ही प्रचलित था। वह अनैतिक समझा जाता था फिर भी उसके कुछ नियम निश्चित थे और उस पर राजाओं का नियंत्रण था।``[13] अत: स्पष्ट है कि आधुनिक युग की तरह ही देह-व्यापार करनेवाली वेश्याओं की स्थिति प्राचीन काल में भी थी। प्राचीन काल में भी समाज की नैतिकता की दृष्टि से वेश्या व्यवसाय घृणित व्यवसाय के रूप में जाना जाता था। ``राजघराणों में जिस प्रकार दासियाँ राजपुत्रों की काम सेवा करती थी, उसी प्रकार सामान्य आदमी के घर में रहकर एक ही पुरुष की सेवा करनेवाली वेश्याओं का भी एक वर्ग रहता था, ऐसी स्त्रियों को `रक्षा` या `रखैल` के नाम से जाना जाता था।``[14]

इस उद्धरण से यह बात स्पष्ट होती है कि वेश्याएँ या रखैल प्रथा प्राचीन काल में भी प्रचलित थी। वे एक ही पुरूष के घर में रहकर उसकी कामतृप्ति का काम करती थी।

``प्राचीन काल में अगर किसी वेश्या ने धन लेकर पुरुष को अपना शरीर नहीं भोगने दिया तो उन स्त्रियों को दुगुना जुर्माना देना पडता था, उसी प्रकार अगर किसी पुरूष ने भोग लेने पर

वेश्या को धन देने से इनकार किया तो उसे भी दुगुना जुर्माना देना पडता था।``[15] इस बात से स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में आज की तरह वेश्याएँ आधारहीन नहीं थी। वे अपने पर हुए अन्याय के खिलाफ न्याय मांग सकती थीं क्योंकि इन वेश्याओं पर राजाओं का नियंत्रण था। भले ही वेश्या व्यवसाय समाज का कलंक है, फिर भी वह समाज की जरूरत है। अत: प्राचीन काल से लेकर अबतक इस व्यवसाय को घृणित माना है। फिर भी कोई इसे बंद नहीं कर सका है। अत: वेश्या व्यवसाय बहुत ही पुराना व्यवसाय है यह कहना अनुचित नहीं होगा।

महाभारत काल में वेश्याओं को राजदरबार में एक विशेष स्थान प्राप्त था। राजदरबार में उनकी इज्जत थी तथा उनकी तरफ देखने की दृष्टि अच्छी थी। राजपुत्रों को शारीरिक भोग देने का कर्म इन दासी रूपी वेश्याओं को करना पड़ता था। ``कौरवों के पास जो वेश्या दासियाँ थीं उनकी कुशलता की खबर युधिष्ठिर ने ली थी इस प्रकार का कथन `उद्योग पर्व` के अंतर्गत पाया जाता है।``[16] तात्पर्य यह कि महाभारत काल में भी वेश्याओं का अस्तित्व था। उन्हें राजदरबार में सम्मान प्राप्त था।

प्राचीन काल के उपरांत वेश्याओं की संख्या में वृद्धि होने के कारण उनकी सामाजिक स्थिति चिंताजनक बन गई। धनार्जन के लिए उनके द्वारा हीन मार्ग को अपनाया जाने लगा। जैसे- ``तत्कालीन साहित्य में विविध प्रसंगों से यह ज्ञात होता है कि मध्ययुग में वेश्या व्यवसाय बहुत बढ़ गया था। वेश्याओं की संख्या बढ़ने के कारण उनमें से अनेक वेश्याएँ हीन वृत्ति की होना संभव है।``[17] तात्पर्य यह कि संख्या में वृद्धि होने के कारण सभी वेश्याओं को राजाश्रय प्राप्त नहीं होता था। ये वेश्याएँ तन बेचकर धनार्जन करने लगीं। तन का व्यापार करने के साथ-साथ ये वेश्याएँ कुटनीति, ढ़ोंग, और नीचता से धन कमाने लगी। इन वेश्याओं के पास कोई भोला-भाला ग्राहक जाएँ तो ये वेश्याएँ उसका सभी धन लूटती थी। ये सब वेश्याओं की संख्या बढने का परिणाम ही है। ``समयमातृक में एक कुट्टनी (वेश्या) का कहना है, ग्राहकों की निर्बुद्धता के कारण ही हमारी चांदी होती है। मूर्ख लोग ही हमारे बातों में आते हैं और फसते हैं। कुमार्ग से ही वेश्याएँ जादा धन कमा सकती हैं। सच्चाई से कभी भी अच्छा नहीं होता बल्कि नाश ही होता है।``[18] तात्पर्य, प्राचीन काल में अगर वेश्याएँ ग्रहकों के साथ छल करती या ग्राहक उसे धोका देते तो राजा के द्वारा उन्हें दंडित किया जाता था परंतु मध्ययुग में इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता। अत: स्पष्ट है कि

वेश्या व्यवसाय राजाधिकार से निकल चुका था। उस पर राजाओं का कोई नियंत्रण नहीं रहा था। जिस प्रकार वेश्याओं के द्वारा मूर्ख ग्राहकों को छलतापूर्वक लूटा जाता था उसी प्रकार कुछ ग्राहकों के द्वारा वेश्याओं को भी अनंत यातनाएँ दी जाती थी। इस बात का उल्लेख ``चाणक्य नीति के अनुसार` ग्रंथ में मिलता है - ग्राहकों की मर्जी के अनुसार, उनकी इच्छा-अनिच्छा के अनुरूप व्यवहार करना, समय, असमय शरीर उनके स्वाधीन कर उनके द्वारा दी जानेवाली यातनाओं को सहना उसी कारण वेश्याओं का व्यवसाय यातनामय होता है ऐसा प्रतिपादन किया है।``[19] स्पष्ट है कि धन की लालसा के कारण वेश्याओं को हर प्रकार के ग्राहकों के साथ संभोग करना पड़ता था। उनके द्वारा दी जानेवाली यातनाओं को अपने दिलो-दिमाग पर झेलना पड़ता था।

तात्पर्य यह कि मध्यकाल में वेश्याओं की स्थिति बहुत शोचनीय थी। उनको पेट पालने के लिए, धन की पूर्ति करने के लिए किसी भी पुरूष के साथ धन लेकर अपना शरीर उसकी सुपुर्द करना पड़ता था। अपना शरीर बेचकर वे अपनी जरूरतें पूरी करती थी। प्राचीन काल में अपनी कला के द्वारा राजाओं को खुश करनेवाली गणिकाएँ, राजा के द्वारा आश्रित दासियाँ आदि वेश्याएँ पेट पालने के लिए देह-व्यापार करने लगी। तात्पर्य यह कि प्राचीन काल से मध्यकाल तक आते-आते वेश्याओं की स्थिति अत्यंत शोचनीय हो गई थी।

ख. वर्तमान कालीन वेश्यावृत्ति :-

प्राचीन काल व मध्यकाल की अपेक्षा वर्तमानकाल में वेश्याव्यवसाय बहुत बड़ी मात्रा में वृद्धिंगत हो गया है। प्राचीन काल में वेश्यावृत्ति पर राजाओं तथा शासकों का नियंत्रण था पर वर्तमान काल में वेश्याओं पर कानूनी नियंत्रण तो है परंतु वह सिर्फ कानून की किताबों में है। आज वेश्याओं की संख्या जनसंख्या के साथ बढ़ती जा रही है। जैसे-जैसे वेश्याओं की संख्या बढ़ती गई वैसे-वैसे उनके व्यवसाय में हीनता की मात्रा बढ़ती गई। भारतीय संस्कृति कोश के अनुसार - ``नौकरी और अन्य उद्योग के लिए अनेक ग्रामीण लोग शहर में आते हैं, परंतु शहर में रहने के लिए अपेक्षित जगह उन्हें नहीं होती, उनका परिवार गांव में ही रहता है। कुछ दिनों के कार्य के लिए भी लाखों की संख्या में लोग शहरों में आते हैं, शहरी वातावरण कामोद्दिप्त होने के कारण वेश्याओं को बड़ी मात्रा में ग्राहक उपलब्ध होते हैं।``[20] तात्पर्य यह कि औद्योगिक विकास के कारण

देहातों से शहर आनेवाले लोगों के सामने शहर में जगह की समस्या है, अत: वे अपना परिवार साथ नहीं ला सकते। सेक्स की भूख नैसर्गिक होती है अत: इसे मिटाने के लिए इन लोगों को वेश्याओं का सहारा लेना पड़ता है। परिणामत: वेश्याओं की मांग बढ़ गई और साथ में वेश्याओं की संख्या में भी अतुलनीय वृद्धि हो गई।

वर्तमान स्थिति में वेश्याएँ प्राचीन काल की तरह अपनी कला बेचने की अपेक्षा अपना शरीर बेचती है। जीवन-यापन के लिए कला का सहारा लेनेवाली वेश्या आज अपने शरीर पर निर्भर है। आज मुंबई जैसे महानगरों में ही नहीं तो हर शहर और देहातों में भी वेश्याओं का व्यवसाय फलित हो रहा है। वेश्याओं की संख्या बढ़ने के कारण वेश्याएँ धनलालसा के कारण शराबी, कुरूप, रोगी, गुंडे आदि ग्रहकों को भी अपना शरीर भोगने देती है। आज महानगरों में बड़े-बड़े कोठों पर देह-व्यापार खूले तौर पर चलता है। कुछ वेश्याएँ `कॉलगर्ल' के रूप में स्वतंत्र व्यवसाय करती हैं। कोई बड़े-बड़े होटलों में नौकरी करने के नाम पर देह-व्यापार करती हैं तो कोई दलालों के माध्यम से घर ही को कोठा बनाएँ बैठी हैं। `कॉलगर्ल' वेश्या ग्राहकों को लेकर किसी होटल या धर्मशाळा में शरीर विक्रय करती हैं। घरेलू किस्म की वेश्याएँ बीचोलियों के माध्यम से ग्राहक प्राप्त कर घर ही में वेश्यावृत्ति करती हैं। ये वेश्याएँ किसी भी आदमी के साथ भोग नहीं लेती। इस प्रकार आज कोठों पर खुले रूप में वेश्यावृत्ति करनेवाली नारी के साथ-साथ समाज में अपनी इज्जत बचाते हुए दलालों के माध्यम से देह-व्यापार करनेवाली घरेलू वेश्या नारी का भी वेश्या में समावेश हो रहा है।

वेश्याओं की वर्तमान वृद्धि में आजकल की देवदासियों का भी हाथ होता है। धर्म के नाम पर ईश्वर की सेवा हेतु देवदासियों की नियुक्ति की जाती थी। मंदिरों को प्राप्त धन-राशि में से जीविकार्जन के लिए कुछ धन का प्रबंध इनके लिए किया जाता था। वर्तमान काल में उनकी जीविका का साधन नष्ट हो गया, समाज में उन्हें कोई सम्मान नहीं रहा। अत: ईश्वर की सेवा करने वाली इन देवदासियों को अपनी प्रतिष्ठा को भूलकर शरीर का व्यापार कर अपनी जीविका चलानी पड़ रही है। `समाज विज्ञान कोश' के अनुसार - ``अंग्रेजों की राज्यसत्ता में राजाश्रय प्राप्त न होने के कारण देवदासियाँ पेट के लिए अपनी प्रतिष्ठा को दांव पर लगाने लगी। बड़े घर की युवतियों ने नृत्य, गायन तथा वादन कौशल्यों में रस लिया और इस कार्य में देवदासियों की पारम्पारिकता

समाप्त हो गई।``[21] तात्पर्य यह कि कला को बेचकर धनसंचय करनेवाली देवदासियों को शरीर बेचकर अपनी जीविका चलानी पड़ रही है।

महानगरों में कोठों पर वेश्यावृत्ति करनेवाली नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय होती है। इन वेश्याओं को नाम मात्र धन देकर उनके द्वारा प्राप्त किया धन उनके आश्रयदाता हडप लेते हैं। इन वेश्याओं में जादातर वेश्याएँ ऐसी होती हैं जो घर से भागी होती हैं या फिर किसी के द्वारा धोखे से लाई जाती हैं। ग्राहक का चुनाव इनकी अपनी इच्छा से नहीं होता जो भी और जैसा भी पुरूष आए उससे धन लेकर उसे शरीर सौंपना पड़ता है। कई वेश्याएँ ऐसी भी हैं जो होटलों पर जाकर देह विक्रय करती हैं तो कई वेश्याओं के सामने जगह की समस्या होती हैं। ये वेश्याएँ जहाँ भी निर्जन स्थान होता है वहाँ ग्राहकों को ले जाती हैं। वेश्यावृत्ति करनेवाली नारी को समाज हीन दृष्टि से देखता है। वास्तव में यह एक समाज का अविभाज्य अंग है परंतु फिर भी उनको समाज में कोई सम्मानजनक स्थान नहीं होता। समाज द्वारा उन पर हर प्रकार के शारीरिक और मानसिक अत्याचार किए जाते हैं। इसके साथ ही, अनेक पुरुषों के साथ शरीर संबंध रखने के कारण उन्हें शारीरिक रोगों का भी सामना करना पड़ता है। नौवें और दसवें दशक में `एड्स` की विकराल समस्या उनके सामने भयावह रूप मे उपस्थित हो रही है।

आज वेश्यावृत्ति प्राचीन तथा मध्यकाल की अपेक्षा बहुत ही वृद्धिंगत हो गई है। संख्या बढ़ने के कारण इनके व्यवसाय में किसी भी प्रकार की व्यवस्था देखने को नहीं मिलती है। आज वेश्याओं का चहुँ ओर से शोषण किया जाता है। इनके आश्रयदाताओं के द्वारा आर्थिक शोषण के साथ-साथ लैंगिक शोषण भी किया जाता है। इसके साथ ही कानून के रखवाले समझे जानेवाले कानून के मुहाफिज भी वेश्यावृत्ति करनेवाली इन औरतों से हप्ता लेते हैं। साथ ही समय-समय पर इनसे अपनी हवस मिटाते हैं। लाचार व असहाय इन वेश्याओं को इनके हर अत्याचार को सहना पड़ता है।किसी वेश्या ने पुलिस की हवस मिटाने से इंकार किया तो पुलिस कर्मचारी द्वारा उन पर बलात्कार भी किया जाता है। मंगल, दिनांक 3 नवंबर 1998, के दैनिक `संध्यानंद` में एक वेश्या पर पुलिस कर्मचारी ने अपने साथियों के साथ बलात्कार करनेवाली खबर छपी थी। खबर के अनुसार उस वेश्या को महाविद्यालय के प्रांगण में अनैसर्गिक संभोग के लिए इंकार करने पर विवेच्य अपराधियों ने उसके साथ बलात्कार किया -``पुलिस कर्मचारी गोफने और नदिम इस्माईल

शेख--- दोनों निर्दिष्ट वेश्या को लेकर `मॉडर्न महाविद्यालय` के प्रांगण में गए। उन्होंने उसके सामने अनैसर्गिक संभोग करने की मांग करने पर उसने इंकार किया, अत: उन दोनों के साथ महाविद्यालय के सुरक्षा कर्मचारी शंकर नारायण बाजे-- और यल्लप्पा वैदू --- इन चारों ने मिलकर उस पर बलात्कार किया। सुबह के समय उसे वही अर्धनग्न अवस्था में छोड़कर वे चारों चले गए।``[22] इस बात से स्पष्ट होता है कि समाज में रहनेवाले असामाजिक तत्वों के साथ-साथ आज कानून व समाज के रखवालों द्वारा भी वेश्याओं का लैंगिक शोषण किया जाता है।

तात्पर्य यह कि प्राचीन काल और मध्यकाल में वेश्याओं को राजदरबार में सम्मान था। उनके कलाओं की राजाओं द्वारा सराहना की जाती थी और उन्हें जीविका चलाने के लिए धन भी दिया जाता था। वेश्याओं में वृद्धि होने के कारण और `संगीत, कला` जैसे क्षेत्र में बड़े घर की युवतियों का सहभाग होने के कारण उन्हें अपनी जीविका चलाने हेतु शरीर विक्रय करना पड रहा है। आज वेश्याओं का सभी ओर से शोषण हो रहा है। एक तो इन्हें समाज में कोई सम्मान नहीं है। समाज उन्हें घृणा की दृष्टि से देखता है और साथ ही उनका असामाजिक तत्वों और कानून के मुहाफिजों द्वारा भी आर्थिक और लैंगिक शोषण होता है। अत: स्पष्ट है कि प्राचीनकाल और मध्यकाल की अपेक्षा वर्तमानकाल में वेश्याओं की स्थिति बहुत ही शोचनीय और दयनीय है।

नारी द्वारा वेश्यावृत्ति स्वीकारने के कारण :-

वेश्यावृत्ति समाज द्वारा घृणित समझा जानेवाला व्यवसाय है। नारी इस व्यवसाय को खुशी-खुशी नहीं अपनाती। नारी द्वारा इस व्यवसाय को अपनाने के पीछे उसकी मजबूरी या कोई ऐसा कारण होता है जिसकी वजह से अपनी इच्छा के विरुद्ध उसको इस घृणित व्यवसाय को स्वीकारना पड़ता है। `भारतीय संस्कृति` कोश के अनुसार नारी द्वारा वेश्यावृत्ति स्वीकारने का मूल कारण पुरूषों की कामासक्त प्रवृत्ति है। जैसे - ``गत पाँच-छ: सौ वर्षों में विशेष रुप से गत सौ-ढेढ़ सौ वर्षों में वेश्याव्यवसाय बहुत बढ़ गया। क्योंकि उसकी मांग बढ़ गई। वेश्यावृत्ति का मूल कारण पुरूषों की कामासक्ति है। नैसर्गिक काम-वासना नैमित्तिक नैतिक मार्ग के द्वारा मिटाना कठिन हो गया कि कामपीडित पुरुष अन्य मार्ग ढूंढता है।``[23] तात्पर्य, नारी द्वारा वेश्यावृत्ति स्वीकारने के पीछे पुरुषों की काम-वासना है। पुरूष अपनी नैसर्गिक काम-वासना की तृप्ति के लिए अनैतिक मार्गों का स्वीकार करता

है। पुरुष की इसी प्रवृत्ति के कारण आज वेश्याओं की मांग बढ़ गई है और उनकी संख्या में भी वृद्धि हो रही है। कई वेश्याएँ ऐसी भी हैं जो धन की लालसा से नहीं अपितु अपनी अदम्य कामवासना की तृप्ति करने हेतु इस व्यवसाय की ओर जानेअंजाने खिंची चली आती हैं। `समाजविज्ञान कोश` के अनुसार निम्नलिखित कारण है जिनके फलस्वरुप नारी वेश्यावृत्ति जैसे घृणित व्यवसाय का स्वीकार करती है -

(अ) `समाजविज्ञान` के अनुसार नारी द्वारा वेश्यावृत्ति स्वीकारने के कारण :-

`भारतीय संस्कृति कोश` में नारी द्वारा वेश्यावृत्ति स्वीकारने के जिन `समाजवैज्ञानिक` कारणों का विवेचन किया है, उन कारणों को यहाँ उद्धृत किया है ः

क. सामाजिक कारण :-

1. परंपरागत व्यवसाय ।
2. उत्सुकता।
3. अच्छे संस्कारों का अभाव।
4. स्वच्छंद वृत्ति।
5. घर का निरीह वातावरण और पीड़ित जीवन।
6. माता-पिता के प्रेम से वंचित।
7. असामाजिक तत्वों का डर।
8. किसी के द्वारा भगाकर तथा बलात्कार करके नारी को इस पेशे के लिए प्रवृत्त किया जाना।
9. प्रेम में मिलनेवाली असफलता।
10. फिल्मों का प्रभाव।
11. फिल्मों का आकर्षण।

12. पति की व्यसनाधिनता।

13. पति द्वारा पीड़ित होना।

14. अतृप्त कामेच्छा।

15. प्रतिशोध की भावना।

ख. आर्थिक कारण :-

1. निर्धनता।

2. नौकरी की प्राप्ति।

3. प्राप्त नौकरी की निश्चितता।

4. धन प्राप्ति की लालसा।

5. पति की नौकरी का अस्थायी रुप।

6. हीनता को छुपाने का प्रयास।

7. परिवार चलाने की जिम्मेदारी।

ग. धार्मिक कारण :-

धर्म के नाम पर चलनेवाली अनैतिक रूढियों के कारण भी वेश्यावृत्ति उत्पन्न होती है। उसके अंतर्गत देवदासी, मुरली (मुरळी), जोगतिन आदि प्रसिद्ध हैं। उन्हें ईश्वर की पूजा हेतु ईश्वर के साथ ही ब्याहा जाता है। धर्म के नाम पर चलनेवाली इस कुप्रथा के कारण नारी वेश्यावृत्ति को अपनाती है।

`समाजविज्ञान कोश` के अनुसार निम्नलिखित धार्मिक कारण है, जो नारी को वेश्यावृत्ति स्वीकारने पर मजबूर करते हैं -

1. स्वेच्छा से ईश्वर को समर्पित होना,

2. ईश्वर की आराधना के लिए स्वेच्छा से खुद को बेचना।

3. परिवार के उत्कर्ष हेतु स्वेच्छा से ईश्वर को समर्पित होना।

4. भक्ति के कारण मंदिर में सेवारत रहना।

5. किसी के द्‌वारा धोखे से मंदिर को अर्पित करना ।

6. राजा-महाराजाओं के द्‌वारा सालांकृत अर्पण कला निपुण स्त्री होना।

7. नियमित वेतन लेकर भगवान के सामने नाचना।

8. अंधविश्वास।

9. उत्तराधिकारी की समस्या।

घ. राजकीय कारण :-

1. राजकीय दांव-पेचों में नारी का प्रयोग।

2. गुंडा -तत्व को खुश करने के लिए नारी का प्रयोग।

3. राजकीय नेता को खुश करने के लिए नारी का प्रयोग।

इस प्रकार `समाजविज्ञान कोश` व `भारतीय संस्कृति कोश` में नारी द्‌वारा वेश्यावृत्ति स्वीकारने के कारणों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। यहाँ केवल संक्षेप में कारणों को संकलित कर प्रस्तुत किया है।

(आ) आलोच्य कहानियों में चित्रित कारण :-

वर्तमान स्थिति में वेश्यावृत्ति समाज में बढ़ती जा रही है। अनेक असहाय व निराश्रित युवतियाँ, विधवा नारी, परित्यक्ता नारी जीविका चलाने के लिए वेश्यावृत्ति द्‌वारा धनार्जन करने लगी हैं। परिणामत: वेश्याओं की संख्या में अनन्य साधारण वृद्‌धि हो गई है, इसी बात से स्पष्ट होता है -``सन

1950 में बंबई में वेश्याओं की संख्या केवल 12000 थी परंतु बंबई के सामाजिक स्वास्थ्य परिषद के मंच से डा. श्रीमती डेकोस्टा (Dr. Dacosta) ने बताया है कि अब वहां यह संख्या लगभग 75000है।``[24] अत: स्पष्ट है कि 1950 से लेकर अबतक 63000 नारियाँ वेश्यावृत्ति को स्वीकार चुकी हैं। वेश्याओं का निमूर्लन करने का कानून बनाने के उपरांत भी वेश्याओं की संख्या में वृद्धि होती ही रही है। इस वृद्धि के कारणों को स्पष्ट करने के लिए `पाक्षिक सारिका` द्वारा `देह-व्यापार-कथा विशेषांक` शीर्षक से पांच विशेषांकों का प्रयोजन किया गया था। इन विशेषांकों में चित्रित कहानियों में निम्नलिखित कारणों पर प्रकाश डाला गया है-

क. सामाजिक कारण :-

जो कारण समाज की रूढ़ि, परंपरा व झूठी मान्यताओं से जन्म लेते हैं तथा पूरे समाज को प्रभावित करते हैं उन कारणों को `सामाजिक कारण` के अंतर्गत रखा जाता है। `समाज विज्ञान` के अनुसार ऊपर निर्दिष्ट जिन कारणों का उल्लेख किया है उन कारणों में से कुछ कारणों का चित्रण आलोच्य कहानियों में हुआ है। उन कारणों के विवेचन को हम प्रस्तुत कर रहे हैं-

1. प्रेम में असफलता :-

भारतीय संस्कृति में `प्रेम` को पवित्र माना जाता था। खुदा की नियामत समझी जाती थी। एक-दूसरे के प्रति आत्मिक आकर्षण ही प्रेम होता है। ऐसे प्रेम में एक को चोट लगती है तो दूसरे के दिल से दर्द उमड़ता है। परंतु आज प्रेम करनेवाले युवक-युवतियों की प्रेम की ओर देखने की दृष्टि ही बदल चुकी है। आज युवतियाँ प्रेमी का चुनाव करते समय उसके पुरुषार्थ व पराक्रम तथा कर्तृत्व को प्रधानता देने की अपेक्षा शरीर के बाहरी सौंदर्य या उसकी धन-दौलत को प्रधानता देती हैं। पुरूष के द्वारा भी स्त्री की आत्मा की अपेक्षा उसके मांसल शरीर को प्रधानता दी जाती है। स्त्री के बाहरी शरीर पर ही उसकी वासना से भूखी निगाहें होती हैं। आज शारीरिक मिलन को ही प्रेम समझा जाता है। शकुंतला चव्हाण के अनुसार - ``प्रेम कुछ समय पूर्व एक शाश्वत मूल्य था। उसका अपना कुछ महत्व था। किंतु आज वह महान शब्द अपना अर्थ खो चुका है। आज नारी-पुरूष संबंध में उसका अर्थ सिर्फ `सहवास` लिया जा सकता है ---- । नारी-पुरूष के विवाह बिना प्रेम असामाजिक माना जाता था। कालांतर ये मान्यताएँ बदली हैं और प्रेम एक अस्थायी शारीरिक संबंधों से जुड़ता गया है।``[25] तात्पर्य यह कि नारी पुरूष का धन देखकर और

पुरूष नारी का मांसल शरीर देखकर ही एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं। ऐसे प्रेम में शारीरिक आकर्षण खत्म होने पर पुरूषों द्वारा नारी का त्याग किया जाता है। ऐसी युवतियाँ बदनाम होने के कारण मुँह छिपाती फिरती हैं और आखिर में कहीं भाग जाकर वेश्यावृत्ति को स्वीकारती हैं।

सत्येंद्र शर्मा की कहानी `शट अप सर !` की सरला, सुरेश नाम के अपने सहपाठी की ऊपरी चमक-दमक देखकर उसकी तरफ आकर्षित होती है। सरला का सुरेश के प्रति आकर्षण आत्मिक नहीं है अपितु सुरेश की भौतिक सुख-सुविधाओं का उसे आकर्षण है। सुरेश भी सरला से सच्चा प्रेम नहीं करता। उसके शरीर को भोगने की कामना पूर्ति हेतु उसके साथ प्रेम का नाटक करता है। उसके शरीर को खुद भी भोगता है और अपने दोस्तों को भी सरला के साथ सुलाता है। सरला वेश्या की तरह सुरेश और उसके दोस्तों की हावस का शिकार बनती है - ``सुरेश के ठाठ-बाट देखकर उस पर मर मिटी और पहले सुरेश फिर सुरेश के माध्यम से उसके दोस्तों के हाथों में खेलती रही।``[26] परिणामत: सरला गर्भवती हो जाती है। लोक-लाज तथा घरवालों की इज्जत की खातिर वह गर्भ गिराने के लिए सुरेश तथा उसके दोस्तों से पैसे मांगती है, उसकी कोई मदद नहीं करता। अंत में सरला उसी मालिक के पास जाती है, जिसके यहाँ सुरेश और उसके दोस्त उसे ले जाया करते थे। बाद में सरला बाकायदा `कॉलगर्ल` का व्यवसाय करने लगती है। सरला को `कॉलगर्ल` बनाने में असफल प्रेम ही प्रमुख है। उसके अध्यापक उसे सुरेश के बारे में पूछते हैं तो वह कहती है - ``अगर वह नहीं मिलता तो शायद आज मैं कॉलगर्ल न होती।``[27] अत: स्पष्ट है कि भौतिक सुखों के प्रति आकर्षण के कारण सरला सुरेश के प्रति आकर्षित होती है। सुरेश अपने दोस्तों के साथ उसका शरीर भोगता है और उसे छोड़ देता है। अंत में सरला को `कॉलगर्ल` बनना पड़ता है।

यौवनावस्था को प्राप्त करने पर लडकियाँ लडकों की तरफ आकर्षित होती हैं। आकर्षण इतना शक्तिशाली होता है कि चहूं ओर उन्हें वहीं व्यक्ति नजर आता है जिसके प्रति वे आकर्षित होती हैं। माता-पिता के विरोध करने के बावजूद प्रेमी से मिलती रहती है। विभांशु दिव्याल की कहानी `प्रेमिका, समुद्र और वह लडकी` की नायिका अपने घरवालों के विरोध में जाकर प्रेम करती है। वह घरवालों को ठुकराकर अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है। प्रेमी द्वारा धोखा देने के बाद वह वेश्यावृत्ति को अपनाती है। प्रेमी के प्रति अपने आकर्षण के बारे में वह कहती है - ``मुझे तब सिर्फ वही दिखाई देता था। घरवाले नहीं चाहते थे कि उस आदमी का साया भी मेरे ऊपर पड़े। किसे होश रहता है, कि देह क्या चाहती है, मन क्या मांगता है, दिमाग क्या कहता है। सब एक होकर एक तरफ भागते है।``[28] अत: स्पष्ट है कि जवानी के

दिनों में जब किसी आदमी के प्रति नारी आकर्षित होती है तो उस पर किसी और की बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता उसे चारो ओर अपना प्रेमी ही नजर आता है। बीर राजा की कहानी `बदकार` की नायिका अपने प्रेमी शाह से बहुत प्रेम करती है। वह अपना सबकुछ उसे सौंप देती है। जब शाह को पैसे की जरूरत होती है तो किसी जान-पहचान वाले से उधार लेकर उसकी जरूरत पूरी करती है। वह शाह को सच्चे दिल से चाहती है परंतु शाह अपना मतलब निकलने के बाद उसे छोड़कर भाग जाता है। शाह के भाग जाने पर रोती-बिलखती नायिका होटल के मालिक से कहती है - ``मै लुट गयी ---वह वह शाह मेरा सब कुछ छीन कर ले गया--- अब क्या होगा ---मेरे पेट में उसका बच्चा है।``[29] अत: स्पष्ट है कि जवानी की गलती के कारण नायिका गर्भवती हो जाती है। समाज में होनेवाली बदनामी के डर से वह बच्चा गिराती है। लोगों के कर्जे चुकाने के लिए वेश्यावृत्ति को अपनाती है। होटल का मालिक वेश्यावृत्ति अपनाने का कारण पूछता है तो वह बताती है - ``मुझे दस हजार से जादा कर्ज चुकाना था।``[30] इस बात से स्पष्ट है कि कथा नायिका शाह से बहुत प्रेम करती थी। उसके भरोसे लोगों से कर्जा लेकर उसकी जरूरतें पूरी करती है परंतु नतिजा निकलने पर शाह उसे धोखा देकर भाग जाता है। और लोगों के उधार चुकाने के लिए नायिका को वेश्यावृत्ति करनी पड़ती है।

प्रस्तुत कहानियों के आधार पर हम कह सकते हैं कि वर्तमान स्थिति में प्रेम आत्मिक प्रेम न रहकर उसको भौतिकता प्राप्त हो गई है। आज प्रेम स्वार्थ, देह-आकर्षण तथा स्वच्छंदी वृत्ति के कारण हीनता की ओर बढ़ गया है। निर्दिष्ट कथाओं से यह भी संकेत मिलता है कि नारी तो पुरूष से सच्चा प्रेम करती है। उसे अपना सबकुछ सौंप देती है परंतु प्रेमी मतलब परस्त होते ही मतलब निकलते ही प्रेमिका को छोड़ देते है।

नारी द्वारा वेश्यावृत्ति स्वीकारने के कारणों में प्रस्तुत कारण बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज यौवन की दहलीज पर कदम रखते ही युवतियाँ युवकों की तरफ आकर्षित होती हैं, वे भले ही प्रेमी से सच्चा, आत्मिक प्रेम करती हो परंतु युवक उन्हें धोखा देते हैं। अपना मतलब निकलने के बाद उन्हें समाज की जिल्लत सहने के लिए छोड़ देते हैं। ऐसी युवतियाँ प्रेम में धोखा मिलने के कारण मानसिक संतुलन खो देती हैं, वे या तो आत्महत्या करती हैं या अपना मुँह छुपाने के लिए कही भाग जाती हैं और ऐसे लोगों के भूलावे में आती हैं जिनका संबंध कोठों से या वेश्यावृत्ति से होता है। ऐसे लोगों पर विश्वास करके युवतियाँ बहुत बड़ी गलतीयाँ करती हैं। ये लोग इन युवतियों को कोठे पर बेच देते हैं और बलपूर्वक उससे

वेश्यावृत्ति करवाते हैं। अत: स्पष्ट है कि प्रेम में असफल होने के कारण नारी वेश्यावृत्ती को अपनाने के लिए मजबूर हो जाती है।

2. उत्सुकता और लैंगिक इच्छा पूर्ति:-

भारतीय संस्कृति में लडके-लडकियों को लैंगिक शिक्षा देना त्याज्य माना जाता है। खुले रूप में लैंगिकता के विषय पर चर्चा करना पाप या घृणित कर्म समझा जाता है। लैंगिकता की शिक्षा न मिलने के कारण युवक तथा युवतियाँ बाजार में मिलनेवाली किताबें पढ़कर लैंगिक विषय का ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करते हैं जो कि पर्याप्त नहीं होता और न ही उसमें सच्चाई होती है। अत: लैंगिकता की शिक्षा न मिलने के कारण इस विषय में अज्ञानी युवक व युवतियाँ उत्सुकतावश उसे जानने की कोशिश करते हैं और किसी अनैतिक मार्ग के द्वारा अपनी लैंगिक इच्छा पूर्ति करने का प्रयास करते हैं। इसी बात को सामने रखकर `डैड लाईन` कहानी में कहानीकार ने लैंगिक पूर्ति तथा उत्सुकता के कारण वेश्या बनी युवती का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी की नायिका शीनी (जो कि उसका असली नाम नहीं है) बचपन से ही अकेले में अपने शरीर को निहारती व सहलाती है। उसे अपने शरीर को सहलाने का शौक-सा लग जाता है। लैंगिक अज्ञानता के कारण वह यह नहीं जानती थी कि शरीर के गुप्तांगों को सहलाने पर सुखद अनुभूति क्यों होती है ? जब भी उसे एकांत मिलता है तब वह अपने शरीर को सहलाती है और एक सुखद अनुभव की अनुभूति प्राप्त करती है। उसका कहना है - ``घरवाले जब भी किसी मित्र या रिश्तेदार के यहाँ मिलने जाते तो पढ़ाई के बहाने वह अकेली घर रह जाती। सबके जाते ही कपडे उतार, शीशे के सामने खड़ी हो अपनी उभरती हुई सुंदरता निहारती रहती, सराहती रहती।``[31]

एक दिन शीनी निर्वस्त्र होकर शीशे के सामने खुद के शरीर को निहार रही थी कि उसे ज्ञात होता है कि कोई और भी उसके शरीर को निहार रहा है। वह घबरा जाती है। बाद में उस लडके के साथ खेलने जाती है तो वह लडका उसके यौवनांगों को छूता है। शीनी को उस लडके का देखना-छुना साधारण नहीं लगता। जैसे-``छूने के बाद उसे ऐसा लगता है वह किसी बिजली के घोड़े पर बैठी उड़ी जा रही हो।``[32] अत: स्पष्ट है कि लड़के द्वरा अपने अंगों को छूने तथा सहलाए जाने पर शीनी को एक वांछित सुखानूभूति क आनंद प्राप्त होता है। बाद में जब भी मौका मिलता तब वह उस लड़के से अपने यौवनांगो को सहलवाती है। इसे सुखानुभूते के नये मार्ग का पता चलता है। उसी सुखानुभूति खोज में

वह रहने लगी। छुट्टियों में अपने परिवार के साथ वह मामा के यहां जाती है। वहां भी एक बड़े से लड़के को अलग ले जाकर उसके साथ खेल-खेलने लगती है। खेल में जो हारेगा उसे जुर्माने के तौर पर जीतने वाले को तीन किस देने की बात होती है। ``जो हारेगा वह जीतने वाले को तीन `किस` देगा।``[33] तात्पर्य यह कि शीनी पहले तो खुद अपने हाथों अपने शरीर को सहलाकर आनंद लेती थी। परंतु जब उसे पता चलता है कि लड़कों द्वारा शरीर को छूने सहलाने पर जादा आनंद मिलता है तो वह मौका मिलते ही किसी लड़के के साथ आनंद लेती थी। परंतु जब उसे पता चलता है कि लड़कों द्वारा शरीर को छूने सहलाने पर जादा आनंद मिलता है तो वह मौका मिलते ही किसी लड़के के साथ आनंद प्राप्त करती है।

कौतूहल व उत्सुकता के कारण भी युवतियाँ वेश्या व्यवसाय की ओर आकर्षित होती हैं। महाविद्यालय की बी.ए. दो की चार छात्राएँ कॉलेज छोड़कर कहाँ जाती हैं इस जिज्ञासा को लेकर शीनी उनका पीछा करती है। उसे पता चलता है कि वे लडकियाँ `चंद्रलोक` होटल में ग्राहकों को खुश करने के लिए जाती हैं। अपना शरीर बेचकर बड़े-बड़े उपहार प्राप्त करती हैं। शीनी भी उनके साथ मिल जाती है। पहले-पहले शीनी को नये-नये मर्दों के साथ सोने में मजा आता है परंतु आगे चलकर उसकी शारीरिक भूख बढ़ जाती है। नये-नये मर्द उसकी जरूरत बन जाते हैं। जैसें -``नयी नजरे, नये स्पर्श, नये जिस्म पहले अच्छे लगे, और फिर एक जरूरत बन गये।``[34] अत: स्पष्ट है कि शानी लैंगिक अज्ञान के कारण अपने शरीर में स्पर्श द्वारा उठनेवाली अलौकिक अनुभूति को पाने के लिए बचपन में लड़कों द्वारा सहलाती है और युवावस्था में शरीर की भूख मिटाने हेतु नये-नये मर्दों का सहारा लेती है। अपनी लैंगिक पूर्ति के लिए उसे नित नये-नये पुरुषों के साथ संबंध स्थापित करना पड़ता है। परिणाम यह हुआ कि शीनी एक पेशेवर वेश्या बन गई।

प्रस्तुत कहानी द्वारा यह तथ्य सामने आता है कि नारी द्वारा वेश्यावृत्ति स्वीकारने के अनेक कारणों में से लैंगिक अज्ञानता और उत्सुकता भी एक कारण होता है।

3. पति की पदोन्नती की अभिलाषा :-

कुछ लोग अपनी पदोन्नति की अभिलाषा पूरी करने के लिए अपनी काबिलीयत की अपेक्षा अनैतिक मार्गों का प्रयोग करते हैं। वे नैतिक रूप में इतने गिर जाते हैं कि अपनी पदोन्नति के लिए अपने से बड़े अधिकारियों को खूश करने के लिए अपनी पत्नी का प्रयोग करते हैं। अपनी पत्नी को मजबूर

करके वे अधिकारियों की भोग- पूर्ति करवाते हैं। पत्नी का सीढ़ी की तरह प्रयोग करके उच्च पद पर आसिन होते हैं। पति के आदेश का पालन करके पति के आधिकारियों को खुश करते-करते पत्नी खुद को वेश्या समझने लगती है। वह एक तरह से वेश्या ही होती है। पति की इसी अभिलाषा को वेश्यावृत्ति का कारण मानकर अशोक गुप्त ने अपनी कहानी `काली खुशबू का फूल` में अदिति द्वारा वेश्यावृत्ति का स्वीकार करते हुए चित्रित किया है।

प्रस्तुत कहानी की नायिका अदिति एक धर्म परायण, पति को परमेश्वर माननेवाली भारतीय नारी है। पति की पदोन्नति की लालसा का शिकार बनी अदिति को पति के अधिकारियों को खुश करने के लिए अपना शरीर उनके सुपूर्द करना पड़ता है। उसका पति तरक्की के लिए पत्नी का सीढ़ी की तरह प्रयोग करता है। आदित्य के शब्दों में - ``मेरे पिता एक सकीट व्यवस्था थे। एल. डी. सी से आगे --- उन्होंने ताबड़तोड़ मंझिले हासिल की थी और हर बार मां को उन्होंने सीढ़ी की तरह इस्तेमाल किया था।``[35] इस बात से स्पष्ट है कि अस्थाना ने अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए पत्नी के शरीर का प्रयोग किया है। अस्थाना की तरह समाज में अनेक लोग ऐसे हैं जो अपनी काबिलीयत पर भरोसा करने के बजाय पदोन्नति के लिए अपनी सुंदर पत्नी द्वारा आधिकारियों को खुश करके उच्च पद को प्राप्त करते हैं। अदिति का कहना है - ``क्योंकि मैंने पाया कि आस्थाना इकाई व्यवस्था की सत्ता नहीं था स्वयं, बल्कि एक बड़ी विराट व्यवस्था का प्रतिबिंब मात्र था।-----, और पाती गयी मैं कि वे सब के सब अस्थाना ही थें। मेरे पास सोने आते थे इसीलिए कि उनकी बिबियों के पास निगम सोया होता।``[37] अदिति के इस कथन से स्पष्ट है कि अपने कार्यालय में उच्च पद पाने की अभिलाषा पूरी करने हेतु अनेक पुरूष अपने अधिकारियों को खुश करने के लिए अपनी खूबसूरत पत्नी का प्रयोग करते हैं।

अदिति पति की अभिलाषा पूरी करते-करते खुद को वेश्या समझती है। उसकी स्थिति किसी वेश्या से कम भी नहीं थी। पति की इच्छा के लिए उसे उस हर आदमी की हवस पूर्ति करनी पड़ती है जो उसके पति की पदोन्नति से संबंधित है। उसी के अनुसार - ``निगम वह अंतिम आदमी नहीं था जो अस्थाना ने भेजा था। अस्थाना की हर उर्ध्वाधर उछाल के साथ कुछ और-और लोग जुड़ते थे इस क्रम में, जिन्हें अस्थाना ने आँख के इशारे में मेरा बेडरुम दिखाया था।``[37] तात्पर्य, जैसे-जैसे अस्थाना की पदोन्नति होती गई वैसे-वैसे अस्थाना के अधिकारियों की संख्या बढ़ती गई और अधिकारियों को खुश करते-करते अदिति कब वेश्या बन गई इस बात का उसे पता ही नहीं चला। और जब पता चला तो बहुत देर हो चुकी

थी। वह कहती है- ``जब अपना वेश्या हो जाना मैंने जाना तो बहुत देर बाद। तुरंत जानपाती तब भी क्या होता ! क्या नकार पाती मैं एक कमजोर स्त्री, हिंदू नारी के संस्कार ? वेश्या हो जाना तो मेरी नियति ही थी।``[38] इससे भारतीय नारी की विवशता की ओर भी संकेत किया है जिसके कारण पत्नी को पति की हर अच्छी-बुरी बातों को मानना पड़ता है।

अदिति अस्थाना के द्वारा ही वेश्या बनाई जाती है। इसी कारण वह अस्थाना से घृणा करती है। उसके मरने के उपरांत भी अपनी सुहाग की निशानी, चुडियाँ नहीं तोड़ती, वह विपुल से कहती है- ``मर तो वह उसी दिन गये थे जिस दिन निगम जिंदा हुआ था उनके सामने। इस तरह तो मैं बहुतों की पत्नी हूँ विपुल, और वे जिंदा हैं। ये चूडियाँ उनके नाम पर रहेंगी, अब।``[39] तात्पर्य यह कि वेश्या नारी के पति की कोई संख्या नहीं होती। इस तरह वह कभी विधवा भी नहीं होती। इसी विचार के कारण अदिति पति के मरने के बाद चुड़ियाँ नहीं तोड़ती।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि पहले निगम बाद में अशरफ, कमिश्नर, नारंग आदि लोगों के साथ सोते-सोते अदिति एक घरेलु वेश्या ही बनती है, जो अपने घर पर पति द्वारा लाए ग्राहकों को खुश करके अपने पति की पदोन्नति की अभिलाषा पूरी करती रहती है। अत: कहना न होगा कि समाज में ऐसे भी लोग हैं जो पदोन्नति के लिए पत्नी को वेश्या बनने पर मजबूर करते हैं।

4. **परित्यक्त :-**

परस्पर विचारों में असमानता के कारण पति पत्नी में तनाव जैसी स्थिति पैदा होती है। इस परिस्थिति में पति-पत्नी एक जगह रहना पसंद नहीं करते, अत: पति पत्नी को छोड़ देता है। ऐसी परित्यक्ता या तलाकशुदा नारी को अगर मैके में सहारा न मिले तो उसे समाज में अकेली रहकर ही अपना जीवन बिताना पड़ता है। परित्यक्ता नारी की गलती हो अथवा न हो परंतु समाज उसे ही दोषी ठहराता है। अत: समाज तथा परिवार द्वारा दी जानेवाली अनगिनत यातनाओं को इस नारी को सहना पड़ता है।ऐसे समय नारी अपनी जीविका चलाने हेतु कहें नौकरी करना चाहती है या फिर कहीं मजदूरी करना चाहती है तो वहाँ भी वासना के भूखे मर्द उसका लैंगिक शोषण करने का प्रयास करते हैं। अत: इन सभी अत्याचारों से तंग आकर परित्यक्ता नारी वेश्यावृत्ति की ओर आकर्षित होती है। रामदरश मिश्र की कहानी `हद से हद तक` की कथा-नायिका पति द्वारा छोड़ी जाने पर अपना पेट पालने के लिए पहले तो भीख मांगती है। बाद

में वेश्यावृत्ति को अपना कर अपना जीवन-यापन करती है।

वेश्यावृत्ति को अपनाने पर उसकी दोनों जरूरते पूरी होती हैं, एक तो उसकी भूख मिटती है दूसरी उसकी कामेच्छा तृप्त होती है। जैसे ``खुश थी, पैसे भी मिलते हैं, और उसकी भयानक काम-ज्वाला भी शांत होती है।``[40]

परित्यक्ता नारी पेट की आग बुझाने और कामतृप्ति के लिए वेश्यावृत्ति अपनाने पर मजबूर होती है।

5. परंपरागत व्यवसाय :-

परिवार का परंपरागत व्यवसाय अपनाने में संतानों की रूचि होती है। कभी-कभी अभिभावक भी मजबूर करते हैं। डॉक्टर की संतान डॉक्टर बनती है, वकील की वकील बनती है उस प्रकार वेश्या की संतान वेश्या बनना पसंद करती है या उसे मजबूर किया जाता है। इस बात को स्पष्ट करते हुए मंटो कहते हैं -``जिस तरह एक दूकानदार का बेटा अपनी नयी दूकान खोलने का शौक रखता है। और इस शौक को विभिन्न तरीकों से प्रकट करता है ठीक उसी तरह वेश्याओं की जवान लड़कियाँ अपना पेशा शुरु करने का बड़ा चाव रखती है।``[41] तात्पर्य बचपन से जवानी तक जिस्म-फरोशी के माहौल में रहने के कारण वेश्याओं की लड़कियाँ इनके धंधे के सभी गुरों को आत्मसात करती हैं। जवान हो जाने पर सहर्ष वेश्यावृत्ति जैसे घृणित व्यवसाय को स्वीकारती हैं। मंटो के ही विचार में -``जिस तरह भंगिन की लडकी को गंदगी का पहला टोकरा उठाते वक्त घिन नहीं आयेगी। उसी तरह अपने पेशे का पहला कदम उठाते वक्त ऐसी वेश्याओं को भी शरम महसूस नहीं होगी।``[42] तात्पर्य यह कि वेश्याओं की बेटियाँ अपनी मां की पारंपारिक वेश्यावृत्ति के व्यवसाय को बेझिझक स्वीकारती है। मंटो की कहानी `ईदन` की ईददन अपनी मां तवायफ जोहराजान नाचने-गाने के व्यवसाय को स्वीकार करती है।

ख. आर्थिक कारण :-

कोई भी नारी अपनी इच्छा से वेश्यावृत्ति को नहीं अपनाती, उसे या तो मजबूर किया जाता है या वह अपने परिवार की दयनीय दशा देखकर वेश्यावृत्ति स्वीकारने के लिए मजबूर होती है। `समाज विज्ञान` के अनुसार नारी द्वारा वेश्यावृत्ति स्वीकारने के कारणों में सबसे अधिक प्रभावशाली

कारण आर्थिक है। आर्थिक दूर्दशा के कारण नारी मजबूरन समाज द्‌वारा त्याज्य, अनैतिक, घृणित हीन समझे जानेवाले इस व्यवसाय को अपनाती है। योगेश सूरी के अनुसार - ``आर्थिक संकट जब विषम परीस्थिति तक पहुँच जाता है तभी वह वेश्यावृत्ति स्वीकार करती है।``[43] अर्थात नारी आर्थिक विपन्नता से तंग आकर ही बड़ी मात्रा में वेश्यावृत्ति की तरफ अनचाहे खिंचती चली जाती है। अति निर्धनता एक प्रकार से ऐसी नारी के लिए अभिशाप ही है। इसके आगे सूरी कहते हैं - ``अति निर्धनता के कारण नारी स्वयं की भूख सहन कर लेगी परंतु जब उसके मां-बाप या उसके बच्चे भूख से बिलख-बिलखकर उसके सामने दम तोड़ रहे हों, ऐसी स्थिति नारी को अपना शरीर बेचने के लिए बाध्य कर देती है।``[44] तात्पर्य यह कि नारी अपनी पीड़ा के पहाड़ सह सकती है परंतु आप्त जनों को अर्थाभाव के कारण भूखा मरता नहीं देख सकती। अत: अपने परिवारवालों और बच्चों को भूख से बचाने हेतु वह वेश्यावृत्ति अपनाने के लिए मजबूर हो जाती है। अत: कहना न होगा कि वेश्यावृत्ति अर्थात यौन संबंधों के व्यवसायीकरण के लिए उत्तरदायी सर्वप्रमुख कारण है - आर्थिक विपन्नता।

आलोच्य कहानियों में आर्थिक विपन्नता के अंतर्गत जिन कारणों का चित्रण हुआ है, उनका विवेचन प्रस्तुत है -

1. पति की निर्धनता :-

पति की निर्धनता के कारण नारी को अपने परिवार के लिए वेश्यावृत्ति को अपनाना पड़ता है। सुभाष अखिल की `बाजार बंद` कहानी में जरीना को उसका पति खुद उसे कोठे पर बेच देता है। वास्तव में पति अपनी पत्नी की इज्जत का रखवाला होता है। उसे कही से भी धन कमाकर देता है परंतु खुद अपने हाथों से उसे किसी कोठे पर नहीं बेचता। परंतु आर्थिक विपन्नता के कारण जरिना का पति उसे बेच देता है। जरिना के बारे में बताते हुए अमीर कहता है - ``उसका खसम छोड़ गया है यहाँ, धंधा करवाने का --- दो सौ नकद ले गया है, बाकी हर हफ्ते उसीसे कुछ ले जाया करेगा। कह रहा था, मेरा अपना ही फाका रहता है, इसे कहां से खिलाऊँगा।``[45] अत: स्पष्ट है कि आर्थिक विपन्नता आदमी को इस कदर मजबूर करती है कि उसे अपनी पत्नी को ही कोठे पर बेचना पड़ता है।

2. माता-पिता की निर्धनता :-

निर्धन माता-पिता के कारण परिवार की अर्थिक समस्याओं का समाधान करने के लिए कुछ युवतियों को वेश्या बनना पड़ता है। सत्येंद्र त्यागी की कहानी `शट अप सर !` की सरला। सुरेश और उसके दोस्तों के कारण गर्भवती होती है। गर्भ गिराने के लिए जब सुरेश और उसके मित्र पैसे देने से इंकार करते हैं और निर्धन होने के कारण सरला माता-पिता से पैसे नहीं मांग सकती तब वह `कॉलगर्ल` के रूप में वेश्यावृत्ति करने लगती है। अपने पिता की निर्धनता को स्पष्ट करती हुई सरला कहती है-``हम चार बहने हैं। पिताजी के पास पैसा नहीं था कि हमें दान-दहेज देकर हमारी डोली विदा करें। सबसे बड़ी बहन की शादी दो साल पहले हुई थी और उससे छोटी की एक साल पहले जब वे तीस-तीस बरस हो गयी -- और यह सब मेरी मेहनत से हुआ।``[46] प्रस्तुत उदाहरण से स्पष्ट होता है कि एक गरीब पिता अपनी बेटियों की शादी की उमर बीत जाने पर भी दहेज के कारण उनकी शादी नहीं कर सकता। उनकी शादी तब होती है जब उनकी ही छोटी बहन वेश्यावृत्ति से धन कमाकर दहेज की पूर्ति करती है।

3. अपनी निर्धनता को छुपाना :-

महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा लेनेवाली गरीब युवतियाँ अपने सहपाठी और दोस्तों में अपनी निर्धनता छुपाने के लिए अच्छे-अच्छे मॉडर्न कपडे पहन कर खुद को धनवान साबित करने के लिए वेश्यावृत्ति को अपनाती हैं। कोई उसे गरीब समझकर उसकी तरफ हीन भावना से देखे यह बात उसे पसंद नहीं है। सत्येंद्र त्यागी की कहानी `शट अप सर !` की सरला अपने अध्यापक से कहती है- ``यहाँ का माहौल ----अमीर-अमीर घरों के लड़के-लड़कियाँ----एक से एक फैशन, पार्टी, पिकनिक---- और मैं नहीं चाहती कि कोई मुझे गरीब समझे---- छोटी नजर से देखे।``[47] तात्पर्य यह कि वैद्यकीय कॉलेज में पढ़नेवाली सरला सहपाठियों के सामने अपने-आप को अमीर साबित करने के लिए कॉलगर्ल बनी रहना चाहती है। `डैड लाईन` की शीनी अपनी सहेलियों को उपहारस्वरूप मिलनेवाली चीजों को पाने की लालसा के कारण शरीर बेचती है।

4. माता-पिता की बीमारी :-

माता-पिता की बीमारी के कारण परिवार की जिम्मेदारी को संभालने के लिए कई

लडकियाँ वेश्यावृत्ति अपनाती हैं। जसबीर चावला की कहानी `फ्रॉक का रंग` में एक अबोध बच्ची को अर्थाभाव के कारण शरीर बेचना पड़ता है। उसकी माँ बिमारी के कारण कोई काम नहीं कर सकती अत: अपनी भूख मिटाने के लिए इस बच्ची को वेश्यावृत्ति का सहारा लेना पड़ता है। लेखक ने उसकी आर्थिक विपन्नता का चित्रण करते हुए लिखा है- ``तालाब में घुसने से पहले वह दोहरी होती हुई उसे फींच लेगी और गारकर घास पर पसार देगी। इन सर्दियों में भी वह इसके करीब-करीब सूख जाने तक नहाती रहेगी ---- तैरती रहेगी --- पानी की चूलियाँ सूरज पर फेंकती रहेगी।``[48] प्रस्तुत उद्धरण को पढने के उपरांत नहाने का आनंद लेनेवाली लडकी का चित्र हमारे सामने खिंच जाता है। परंतु कहानी की कल्पना अपनी आर्थिक दुर्दशा के कारण खुद देह-व्यापार करके अपना और अपनी मां व छोटी बहनों का पेट पालना चाहती है। इस लड़की के पास पहनने के लिए दूसरा फ्रॉक भी नहीं अत: नहाते समय फ्रॉक को धोकर वह उसके सुखने तक पानी में ही नहाती रहती है वो भी सर्दियों में, ठंडे पानी में। माँ बीमार होने के कारण - ``उसकी दो छोटी बहने भी है। विश्वविद्यालय की कैंटीन में वह जूठे बर्तन धोती है।``[49] तात्पर्य यह कि माँ के बीमार होने पर कल्पना जैसी असहाय बच्चियों को भी पेट पालने के लिए देह-विक्रय करना पड़ता है और उसकी छोटी बहनों को जूठे बर्तन धोने पड़ते हैं।

5. कर्ज चुकाना :-

असहाय नारी को लोगों का कर्ज चुकाने के लिए अपने शरीर का सौदा करना पड़ता है। बीर राजा की कहानी `बदकार की नायिका शाह से प्रेम करती है। शाह परीक्षा फल पाते ही उसे छोडकर विदेश चला जाता है। नायिका शाह की पढ़ाई के लिए लोगों से कर्जा लेती है अत: शाह के विदेश चले जाने पर लोगों का कर्ज चुकाने के लिए नायिका वेश्यावृतित को अपनाकर धनार्जन कर चुकाती है। हॉटेल मालिक ने वेश्या बनने का कारण पूछा तब वह बताती है -``मुझे दस हजार से जादा कर्ज चुकाना था।``[50] कथा नायिका की लोगों का कर्ज चुकाने की हैसियत नहीं थी। उसकी हैसियत होती तो वह समाज द्वारा घृणित समझे जानेवाले वेश्यावृत्ति जैसे व्यवसाय को नहीं अपनाती। अत: शाह के लिए लोगों से लिया उधार चुकाने के लिए उसे वेश्यावृत्ति को अपनाना पड़ता है।

6. स्थायी रूप में मजदूरी पाना :-

वर्तमान स्थिति में नौकरी पाने के लिए हर तरह की घूस देनी पड़ती है। नारी को तो अपने

शील का मोल भी चुकाना पड़ता है। इसी तरह एक ही जगह मजदूरी प्राप्त करने के लिए भी नारी को अपना शरीर घूस के रूप में लोगों के सामने प्रस्तुत करना पड़ता है। राकेश तिवारी की कहानी `बाबू के लिए` की नायिका चंदा अपने पति के साथ नवेड़ा यु.पी. से दिल्ली में मजदूरी करने के लिए आती है। आर्थिक विपन्नता के कारण उसे अपने पति के साथ गाँव छोड़कर मजदूरी की तलाश में भटकना पड़ता है। दिल्ली आकर वह पति के साथ एक ठेकेदार के यहाँ मजदूरी करती है। वही एक इंजिनियर ने उसे नियमित रूप से काम देने का आश्वासन देकर उसे भोगा था। अपनी हालत को बयान करती हुई चंदा कहती है - ``दारु की बदबू वाले मुँह से हमारी नाक सड़ गई। हम फिर भी खुश थे। इंजीनर ने बोला था कि वो हमें सारी उमर काम देंगे।``[51] स्थाई रूप में काम प्राप्त करने के लिए भी इंजिनीयर को अपना शरीर देकर खुश करना पड़ता है। और उसी दिन से वह बाबू लोगों को अपना शरीर सौंपकर खुश करने लगी ताकि वे प्रसन्न होकर उसे और उसके पति को पूरी उम्र काम पर रख ले। यहाँ चंदा अपनी आर्थिक दूर्दशा के कारण ही मजबूर होकर अपना तन बेचती है और एक वेश्या की तरह ही काम पाने के लिए बाबू लोगों को शरीर देकर खुश करने की कोशिश करती है।

7. भौतिक जरूरतें पूरी करने की लालसा :-

माता-पिता द्वारा लडकियों की जरूरतों को अनदेखा करने के कारण लड़कियाँ अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए कभी-कभी अपने शरीर को बेचकर धन कमाती हैं। यशपाल वैद द्वारा लिखी कहानी `स्थितियाँ` की नायिका के पिता पहली पत्नी मर जाने पर एक जवान औरत से शादी करते हैं। उनके दो बेटियाँ हैं परंतु नयी पत्नी के साथ रंग-रंगेलियाँ मनाने में मशगुल नायिका का बाप अपनी बेटियों की खबर तक नहीं लेता। उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें पैसे नहीं देता अत: अपनी छोटी बहन और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए उसकी लड़की कभी-कभार झूठ बोलकर घर से बाहर निकलती है और अपना शरीर बेचकर मिलनेवाले पैसों से अपनी जरूरते पूरी करती है। अपने पिता के बारे में बताते हुए वह कहती है - ``पापा उसी के साथ रंगरेलियाँ मनाने में मस्त हैं। हमारा ध्यान ही नहीं देते। हमारी जरूरतें ही पूरी नहीं होती। पैसा दबाकर रखते हैं। हालांकि अच्छी आय है।``[52] अपनी भौतिक जरूरतें पूरी न होने के कारण परेशान लडकी एक बुरी औरत के बहकावे में आकर वेश्यावृत्ति के रास्ते पर निकल पड़ती है। वह कहती है-``महीने में दो-तीन बार झूठ बोलकर निकल आती हूँ। कुछ कमा लेती हूँ। अपनी जरूरतें पूरी कर लेती हूँ।``[53] भौतिक सुख-साधनों की प्राप्ति के लिए शरीर बेचनेवाली लड़की का चित्रण

कर कहानीकार ने माँ-बाप को सजग रहने की आवश्यकता स्पष्ट की है।

8. पारिवारिक जिम्मेदारी :-

बूढे माँ-बाप की जिम्मेदारी को पूर्ण करने के लिए भी नारी को वेश्या बनना पड़ता है। रमेश बत्तरा द्वारा लिखी कहानी `चकले का चरित्र` में चकला चलानेवाली वेश्या चंदा अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में कहती है - ``अब तुझसे क्या छिपा है बेटा, इधर हाथ तंग हो गया है --- खर्चा पूरा नहीं पड़ता ---बारहवीं तारीख बीत गई और लडकियों ने घर, एक पैसा भी नहीं भेजा।``[54]

प्रस्तुत कहानियों के अध्ययन और विवेचन से यह बात स्पष्टत: सामने आती है कि आर्थिक अभाव के कारण मजबूर होकर वेश्य वृत्ति को अपनानेवाली औरतों की संख्या अधिक हैं। नौकरी तथा मजदूरी प्राप्त करने के लिए भी नारी को वेश्या की तरह अपना शील दाँव पर लगाना पड़ता है। अपने शरीर की भेंट आधिकारियों के सामने चढ़ानी पड़ती है। सुनंत कौर का कथन सौ प्रतिशत सही लगता है कि ``वेश्यावृत्ति अर्थात् यौन संबंधों के व्यावसायीकरण के लिए उत्तरदायी सर्व प्रमुख कारण है आर्थिक विवशताएँ।``[55] अर्थात नारी द्वारा वेश्यावृत्ति स्वीकारने के जितने भी कारण हैं उन सभी कारणों में आर्थिक विवशता बहुत ही प्रभावी कारण है। अर्थ के अभाव में नारी खुद तो भूखी मर सकती है परंतु अपने परिवार के सदस्यों को भूख से बिलख-बिलखकर मरता नहीं देख सकती। अत: वह वेश्यावृत्ति जैसे घृणित कर्म को अपनाती है और अपने परिवार की आर्थिक विवशताओं को दूर करने का प्रयास करती है।

ग. धार्मिक कारण :-

अंधविश्वास, परंपरा, अज्ञान, धर्म की झूठी मान्यताओं के कारण अनेक युवतियों को वेश्यावृत्ति का स्वीकार करना पड़ता है। इसका प्रमुख उदाहरण महाराष्ट्र राज्य में प्रचलित `देवदासी` प्रथा है। `भारतीय समाजविज्ञान कोश` के अनुसार ``धान्योत्पत्ति और प्रजोत्पत्ति का कारण स्त्री-पुरूष मिलन होता है। इसीलिए स्त्री संपर्क का आनंद ईश्वर को भी प्राप्त हो इस उद्देश से देवताओं की शादियाँ देवदासियों के साथ की जाती थी।``[56]

इस प्रथा के कारण अनेक युवतियाँ ईश्वर की सेवा हेतु `देवदासी` बनायी जाती हैं। ऐसी देवदासियाँ भगवान की सेवा के साथ-साथ समाज में स्थित काम-लोलुप पुरूषों की शय्या-सेवा भी करती

हैं। अत: इन देवदासियों को वेश्या का रूप प्राप्त हुआ है। देवदासी-प्रथा के साथ-साथ धर्म की झूठी मान्यता और नियमों के कारण भी स्त्री को वेश्यावृत्ति स्वीकारनी पड़ती है। इसी बात को यशपाल ने `मैं वेश्या बनूंगी` कहानी द्वारा स्पष्ट किया है। प्रस्तुत कहानी की नायिका `दारा` एक दासी है। दासता से तंग आकर वह अपने नवजात बच्चे शाकुल के साथ बुद्ध स्थवीर की शरण में जाती है और उसके सामने धर्म की शरण मिलने की याचना करती है। परंतु स्थवीर उसे धर्म का नियम बताते हुए कहते हैं - ``देवी, धर्म के नियमानुसार स्त्री के अभिभावक की अनुमति के बिना संघ स्त्री को शरण नहीं दे सकता।``[57] इस बात से स्पष्ट है कि स्त्री को पुरूष की मदद के बिना असहाय दिखाया है। वह पुरूष के बिना कोई भी काम नहीं कर सकती। उसे हर कार्य की सिद्धि के लिए पुरूष की मदद लेनी पड़ती है। पिता, पति, पुत्र इन्हीं के आश्रय में स्त्री का अस्तित्व है। अत: धर्म में शरण लेने के लिए भी स्त्री को पुरूष की अवश्यकता पड़ती है।

दारा का कोई अभिभावक नहीं है। अत: स्थवीर उसे धर्म की शरण देने में असमर्थता प्रकट करते हैं। दारा के पूछने पर कि भगवान बुद्ध ने तो वेश्या को भी बौद्ध धर्म की शरण दी है, तब स्थविर उसे कहते हैं - ``वेश्या स्वतंत्र नारी है देवी।``[58] तात्पर्य यह कि वेश्या नारी को छोड़कर कोई भी नारी स्वतंत्र नहीं होती। स्थविर की बात सुनकर दारा सोचती है कि वेश्या स्वतंत्र नारी है, उसे अपना निर्णय खुद लेने की अनुमति है परंतु मुझे नहीं ! इसी बात से परेशान व असहाय दारा किसी भी जगह आश्रय न मिलने के कारण वेश्या बनने का निश्चय करती है। वह सोचती है कि स्थविर के कथनानुसार वेश्या स्वतंत्र नारी है, वह अपने बारे में खुद निर्णय ले सकती है और उसे धर्म की शरण भी प्राप्त होती है तो वह अपनी संतान के लिए वेश्या बनेगी।

प्रस्तुत कहानी में यशपाल जी ने धर्म की झूठी मान्यता पर कड़ा व्यंग्य किया है। इन नियमों के कारण एक असहाय नारी को धर्म की शरण की आवश्यकता होते हुए भी उसे धर्म की शरण नहीं मिलती। असहाय नारी को स्थविर धर्म की शरण देते तो वह वेश्या बनने का निर्णय नहीं लेती। जहाँ धर्म का पहला कर्तव्य होना चाहिए कि वह समाज की भटकी असहाय नारी को धर्म की शरण दे वहीं धर्म अपनी थोथी मान्यताओं को सामने रखे ऐसी नारी को धर्म में शरण देने में असमर्थता दिखाते हैं। अत: स्पष्ट है कि सामाजिक तथा आर्थिक और राजनीतिक कारणों की तरह धर्म का भी समावेश होता है।

वेश्याओं के प्रकार :-

`भारतीय संस्कृति कोश` के अनुसार वेश्याओं को दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है। यह विभाजन उनके कार्यव्यापार को आधार बनाकर किया गया है।

क. गणिका :-

गणिका साधारण वेश्या की तरह शरीर का व्यापार नहीं करती थी वरन् वह अपनी कला के द्वारा राजामहाराजाओं का दिल जीतकर धन कमाती थी। प्राचीन काल में इन गणिकाओं को एक विशेष प्रकार का स्थान और पद राजा के द्वारा प्राप्त होता था। इनको राजाओं तथा शासकों के द्वारा सम्मानित किया जाता था। उन पर राजा-महाराजाओं का विश्वास था। उन्हें राजा द्वारा प्रतिमास एक निश्चित धनराशि प्राप्त होती थी। गणिकाओं को प्राचीन काल में एक विशेष सम्मान प्राप्त था यह इसी बात से स्पष्ट होता है कि ``हमारे राजा महाराजाओं के कुँवर उन तवायफों के घर में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थें। जीवन कला के कई अमूल्य गुर वे वहीं पर सीखते थें, क्योंकि उस दौर की तवायफे या गणिकाएँ जीवन कला के अभ्यास में निपुण समझी जाती थी।``[59] इस बात से गणिकाओं के प्राचीन कालीन स्थान तथा सम्मान का पता चलता है। ये गणिकाएँ राजदरबार में अप्नी कला-कौशल से राजाओं को खुश करती थी। इसके फलस्वरूप राजा द्वारा उन्हें उपहार तथा धन प्राप्त होता था। प्राचीन काल में गणिका बनना इतना आसान नहीं था जितना आज है। प्राचीन काल में वेश्या बनने के लिए कुछ गुणों की आवश्यकता होती थी, जो औरत उन गुणों से परिपूर्ण होती थी उसे ही राजा द्वारा गणिका चुन लिया जाता था।

`कामसूत्र` के रचयिता वात्सायन के ``कामसूत्र ग्रंथ के `विद्यासमुद्देश` नामक दूसरे अध्याय में चौंसठ कलाओं का वर्णन मिलता है। इन चौंसठ कलाओं में चौबीस कर्माश्रिय, बीस- द्यूताश्रर्या और शेष रति-व्यापार से संबद्ध थी गणिकाओं का इन सभी कलाओं में पारंगत होना जरूरी था।``[60] इस बात से स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में गणिका होना सरल काम नहीं था। कोई सभी गुणों से युक्त युवती ही गणिका चुनी जाती थी। वात्सायन द्वारा बनाए चौंसठ गुणों को `सारिका` पाक्षिक में से उद्धृत किया गया है-

वात्सायन द्वारा प्रेरित, वेश्याओं में निहित चौंसठ कलाओं की तालिका इस प्रकार है-

1. गायन
2. वाद्य
3. नृत्य
4. चित्रलेखा
5. विशेषच्छेद्य (कटाव से चित्रांकन)
6. तंडुल कुसमावलि विकार (चावल आदि से चौक पूरना)
7. पुष्पास्तरण (पुष्प रचना)
8. रंजन कला (दांत, कपडे व अंगों को रंगों से संवारना)
9. गणिभूमिका कर्म (गच तैयारी)
10. शायन रचना (सेज सजाना)
11. उदक वाद्य (जल तरण आदि)
12. उदकाघात (जल क्रिडाएँ)
13. मित्र योग (टोना-टोटका आदि)
14. माल्यथन (माला गूंथना)
15. कापीढ योजना (फूल गूंथना)
16. नेपथ्य प्रयोजन (आज के फेंसी ड्रेस के समान)
17. कर्णपत्रभंग (दांत, शंख आदि से वेश रचना)
18. गंध युक्ति (सुगंध लगाने की विधियाँ)

19. भषण योजन

20. इंद्रजाल (जादू के खेल)

21. कौचमार(कुचमार ऋषि द्वारा बताये गए सुभंग करण)

22. हस्त लाघव (हाथ की सफाई)

23. भोजन पानक (पाक- शास्त्र)

24. सूचिवान कर्म (सूई, सिलाई)

25. सूत्र क्रीड़ा (डोरों का खेल)

26. वीणा-डमरू वादन

27. प्रहेलिका (पहेलियाँ बुझाना)

28. प्रतिमाला (अंत्याक्षरी आदि)

29. दुर्वचिक योग (पद्य रचना जिसे बोलना कठिन हो)

30. पुस्तक वाचन

31. नाटक आख्यायिका दर्शन

32. काव्यसमस्यापूर्ति

33. वेत्रवान (बेत की बुनाई)

34. तक्ष कर्म

35. तक्षण (बढ़ई का काम)

36. वास्तु विद्या (घर बनाना)

37. रूप्य रत्न परीक्षा

38. धातुवाद (धातु शोधन)

39. मणिरागाकर ज्ञान

40. वृक्षायुर्वेद योग (वृक्ष ज्ञान)

41. मेष कुक्कटलावक युद्ध विधि

42. शुक- सारिका प्रलाप

43. मर्दन कौशल (मालिश आदि)

44. अक्षर-मुष्टिका कथन (सांकेतिक भाषा)

45. स्लेच्छित (गूढ बातचीत)

46. देश-भाषा विज्ञान

47. पुष्प शकटिका

48. निमित्त ज्ञान (शकुन विचार)

49. यंत्र मात्रिका (यंत्र ज्ञान)

50. धारण मात्रिका (सुनकर धारण करना)

51. समपाण्य (साथ पढ़ाना)

52. मानसी (आकृतियों में लिखे गये श्लोक नढ़ देना)

53. काव्य क्रिया

54. अभिज्ञान कोष (स्मरण करना)

55. षंदोज्ञान

56. क्रियाकल्प (रचना-परीक्षा)

57. छलित योग (ठग विद्या)

58. वस्त्रगोपन

59. द्यूत विशेष (जुए के खेल)

60. आकर्षक्रीड़ा (पासे खेलना)

61. बाल क्रिड़ा

62. वैनयिकी (पशुसाध लेना)

63. वैजयिकी (विजय दिलानेवाली विद्याएँ)

64. व्यायामिकी (व्यायाम, शिकार)

उपरोक्त चौंसठ कलाओं से युक्त स्त्री ही गणिका के रूप में राजाओं द्वारा चुनी जाती थी।

ख. वारयोशिता :-

`भारतीय संस्कृति कोश` के अनुसार गणिकाओं के साथ-साथ शरीर को बेचकर धन कमानेवाली वेश्याओं का अस्तित्व भी प्राचीन काल में था उन्हें `वारयोशिता` के नाम से अभिहित किया जाता था। ये वारयोशिताएँ नगर के किसी विशिष्ट स्थान पर रहती थी और जिस्म-फरोशी का व्यापार चलाती थी।

वर्तमान काल में गणिकाओं का अस्तित्व ही खत्म हो चुका है क्योंकि अंग्रेजों के बाद इनकी कला को चाहनेवाले राजा-महाराजाओं का अस्तित्व समाप्त हो गया है। अत: कला को बेचकर जीवन-यापन करनेवाली कला की इन मूर्तियों को वारयोशिता बनकर अपना जीवन व्यतित करना पड़ रहा

है। वर्तमान युग में देह-व्यापार करनेवाली वेश्याएँ प्राचीन काल की वारयोशिता का ही रूप है। इन वेश्याओं के देह-व्यापार करने की पद्धति को सामने रखकर `सूरी` ने `यशपाल के उपन्यासों मे`नारी जीवन की समस्याएँ` में वेश्याओं के निम्नलिखित प्रकार गिनाए हैं-

1. कोठे की वेश्याएँ।

2. कॉल-गर्ल्स।

3. होटलों की वेश्याएँ।

4. रखैल वेश्याएँ।

इस वर्गीकरण के आधार पर `पाक्षिक सारिका` की कहानियों में चित्रित वेश्याओं के शरीर-विक्रय पद्धति को सामने रखकर निम्नलिखित प्रकारों में उनका विभाजन किया जा सकता है-

पाक्षिक `सारिका` के कहानी विशेषांकों में चित्रित वेश्याओं के प्रकार :-

प्रस्तुत प्रकारों का वर्गीकरण करने के लिए उनकी देह-व्यापार की कार्य पद्धति को सामने रखा है।

क. कोठे की वेश्याएँ :-

इस प्रकार की वेश्याएँ एक निश्चित स्थान पर अपना व्यवसाय चलाती हैं। इन वेश्याओं की व्यवस्था के लिए एक प्रभावशाली और बुढ़ी औरत की नियुक्ति होती है। इस औरत ने भी जवानी में अपने शरीर का व्यापार किया हुआ होता है। यही औरत वेश्याओं में ग्राहक बांटने का कार्य करती है। योगेश सूरी के अनुसार - ``इन वेश्याओं के कुछ निश्चित क्षेत्र ( Read light areas) होते हैं। यौन व्यापार में इनकी अपनी कोई पसंद नहीं होती।``[61] तात्पर्य यह कि इन वेश्याओं पर उनके आश्रयदाता का ही अधिकार होता है। जो भी और जैसा भी आदमी उनके पास ग्राहक बनकर जाता है तो उसके सामने शरीर प्रस्तुत करना पड़ता है। इनकी आय का कुछ अंश मात्र धन इनके हिस्से में आता है। बाकी धन आश्रय देनेवाले ले लेते हैं। सुभाष अखिल की कहानी `बाजारबंद` की जरीना, सागर सरहदी की कहानी

`हमपेशा` की सुमती, नेल्सन एल्ग्रेन की `तुमारी चाहत बस एक रात की` कहानी की किटी, फ्लोरा, हैली, गुलजार की कहानी `देवरजी` की सलमा, वीरेंद्र जैन की कहानी `तुम मत आना` की टीना और लिजा (जिसका असली नाम लाजवंती है) रमेश बत्तरा की कहानी `चकले का चरित्र` की चंद्राबाई आदि सब कोठे की वेश्याएँ हैं। ये वेश्याएँ कोठे पर आए ग्राहकों से धन लेकर अपना शरीर उसे भोगने देती हैं। ग्राहकों का चुनाव ये नहीं करती बल्कि ग्राहक इनका चुनाव करता है। जिस्मे फरोशी के इस व्यापार के कोठे की वेश्याओं को ग्राहक चुनने की स्वतंत्रता नहीं होती किसी भी टाईप के ग्राहक को उन्हें खुश करना पड़ता है।

कोठे की वेश्याएँ किसी सामाजिक तत्वों के अधिकार में रहती हैं। इन्हें अपनी मर्जी से किसी भी कार्य को करने की अनुमति नहीं होती। यहां तक कि उन्हें ग्राहकों के साथ जादा बातचीत करने की भी मनाई होती है। `तुम मत आना` कहानी की वेश्या राजन से कहती है- ``बस जादा बातें मत करो। कोई सुन लेगा तो तुम्हारी भी पीटाई हो सकती है।``[62] अत: स्पष्ट है कि इन कोठों पर देह-व्यापार करनेवाली वेश्याएँ किसी गुंडा किस्म के आदमो की सरफरस्ती में जिस्म का व्यापार करती हैं। ग्राहकों के साथ बातें करने से ग्राहक और वेश्या में मेल-जोल बढ़ जाता है। इसका परिणाम धंधे पर होता है। अत: इन्हें ग्राहकों से जादा बातचीत नहीं करने दी जाती जो करती हैं उन्हें और ग्राहक दोनों को पीटा जाता है।

कोठे का बाजार शाम ढलने-ढलते खुलता है। वेश्याएँ बनाव-शृंगार करके कोठे की बाल्कनी में खड़ी रहकर ग्राहकों का इंतजार करती हैं। रास्ते पर आते-जाते लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए मादक हावभाव करती हैं। वीरेंद्र जैन ने `तुम मत आना` कहानी में कोठे का बहुत ही सटीक वर्णन किया है। जैसे -``इस बरामदे में बहुत-सी लडकियाँ घेर बनाएँ बैठी थी किसी ने काफी कम कपडे पहन रखे थे किसी ने बहुत अधिक। कोई बहुत जादा मेकअप किए हुए थी कोई बहुत कम।``[63] अत: स्पष्ट है कि ग्राहक को आकर्षित करने के लिए इन वेश्याओं को अपने बनाव-शृंगार की ओर काफी ध्यान देना पड़ता है। ग्राहक आने पर उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने का उनका अपना एक अलग ढ़ंग होता है। सबकी उपस्थिति में बेशर्मों की तरह ये वेश्याएँ ग्राहक के गले में बाहें डालती हैं, उसको चुमती है, ग्राहक के साथ प्यार भरी बातें भी करती हैं। जैसे -``हमें देखकर बहुत-सी लडकियाँ चहकती-सी आगे बढ़ आई एक लड़की ने मेरा हाथ पकड लिया , ----तभी वह मेरे गाल से गाल सटाकर कई दिन बाद आने की उलाहना देने लगी।``[64] तात्पर्य यह कि ग्राहक को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए ये वेश्याएँ हर तरह

से प्रयास करती हैं। दूसरी बात यह कि जिस्म-फरोशी के दौरान उन्होंने इतने ग्राहकों को शरीर बेचा होता है कि उनके पास आनेवाले प्रत्येक ग्राहक को देखकर उन्हें लगता है कि वह पहले भी कभी उनके पास आया था।

इन वेश्याओं की हालत बहुत ही खराब होती है। ग्राहक न मिलने पर उन्हें खाना तक नसीब नहीं होता। उनकी जीविका का साधन मात्र उनका शरीर होता है। उसे खरीदने के लिए अगर कोई खरीदार नहीं मिलता तो उन्हें भूखा भी रहना पडता है। इनके पास ग्राहक से प्राप्त धनराशि में से अल्पसा धन इन्हें मिलता है, जिसमें से वे अपनी जरूरतें पूरी करने के साथ-साथ अपने परिवार का खर्चा भी उठाती हैं। `चकले का चरित्र` कहानी में वेश्या चंद्राबाई कहती है - ``अब तुमसे क्या छिपा है बेटा, इधर हाथ तंग हो गया है---- खर्चा पूरा नहीं पड़ता बारहवीं तारीख बीत गई और लडकियों ने घर एक पैसा भी नहीं भेजा।``[65] तात्पर्य, इन वेश्याओं को अपनी सीमित आय में अपनी जरूरतों के साथ-साथ परिवार की जरूरतें भी पूरी करनी पड़ती हैं।

कानूनन वेश्यावृत्ति चलाना जुर्म है परंतु कानून के रखवाले भी वेश्याओं से हप्ता लेकर अपनी आंखे तथा मुँह बंद कर लेते हैं। जब इन्हें हप्ता नहीं मिलता तो कानून के मुँहाफिज इन वेश्याओं को तरह-तरह से परेशान करते रहते हैं। चंद्राबाई अपनी हालत और पुलिस की रिश्वतखोरी का पर्दापाश करती हुई कहती है- ``कई लोगों ने तो डर के मारे आना ही छोड़ दिया है। अब कर लो मुजरा। रिझा लो ग्राहक--- कमा लो पैसे। ----लडकियाँ बेचारी सिनेमा देखने तक को तरस जाती हैं---- उस पर पुलिसवाले हप्ता भी लेते हैं और छापा भी मारते हैं ---- मौजे मनाने भी आ धमकते हैं ---- और कहो कि हम तो सिर्फ मुजरा करते हैं और कुछ नहीं, फिर पैसे किस बात के ? -----तो जवाब मिलता है``नहीं करते तो करो तुम को रोका किसने है ? हमारा हप्ता न मिला तो हम कुछ भी न करने देंगे।``[66] तात्पर्य यह कि कोठे की वेश्याओं का देह-व्यापार पुलिसवालों की सरफरस्ती में ही चलता है। ऐसी वेश्याओं का जीवन बहुत ही दु:खमयी होता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि कोठे पर वेश्याव्यवसाय करनेवाली वेश्या नारी को उनके आश्रयदाता, समाज, पुलिस व दलाल आदि के हाथों शोषित होना पड़ता है। इन शोषकों के कारण उनकी अपनी स्थिति बहुत ही चिंताजनक है।

ख. कॉलगर्ल :-

कॉलगर्ल का सीधा-सा अर्थ है जो कॉल करने पर आती है तथा कॉल करके बुलाई जाती है। ऐसी वेश्याओं का व्यवसाय करने का कोई निश्चित स्थान नहीं होता। ग्राहक जहाँ बुलाते हैं वहाँ वह निश्चित समय पर पहुँच जाती है। योगेश सूरी के अनुसार - ``इन वेश्याओं के धंधे का कोई निश्चित स्थान नहीं होता बल्कि उन्हें जिस स्थान पर बुलाया जाता है वह निर्धारित समय पर उस स्थान पर पहुँचकर अपना व्यापार चलाती हैं।``[67] इस तरह का व्यवसाय करने के लिए इन वेश्याओं को अनेक मददगारों की जरूरत होती है, जिनके द्वारा उन्हें ग्राहक मिलते हैं। दलाल, टॅक्सी ड्रायव्हर, रिक्षा चालक, होटलों के कर्मचारी आदि के द्वारा इन वेश्याओं के साथ संपर्क किया जा सकता है। इस काम के लिए ये लोग दलाली लेते हैं। कोठे की वेश्याओं की अपेक्षा इन वेश्याओं की स्थिति काफी अच्छी होती है क्योंकि इन वेश्याओं को जिस्म बेचने के लिए कोई मजबूर नहीं करता। ग्राहकों का चुनाव वह खुद करती है और उसके साथ सोना नहीं चाहती तो कोठे की वेश्याओं की तरह इन्हें कोई मजबूर नहीं करता। जिस्म-फरोशी में उन्होंने खुद अपने जिस्म की कीमत निश्चित की होती है। अर्थात इनकी कमाई का धन इनके अपने ही हाथों में रहता है। इससे जादा लाभदायक बात इन वेश्याओं की दृष्टि से यह है कि ये सामान्य नारी जैसा व्यवहार करती हैं। अत: पहचानी नहीं जाती। इस कारण समाज में इन पर कोई उंगली नहीं उठाता।

सत्येंद्र शर्मा की कहानी `शट अप सर !` की नायिका सरला `कॉलगर्ल` टाईप की वेश्या है। अपनी पढ़ाई के साथ-साथ परिवार की सारी जरूरतें पूरी करने के लिए उसे `कॉलगर्ल` बनना पड़ता है।सरला के बारे में जानकारी देते समय रिसेप्शनिस्ट कहती है - ``वैसे तो वह यहाँ मेडिकल कॉलेज में पढ़ती है --- पर कॉलगर्ल है ---- फीस पांच सौ रूपये ---- तीन सौ उसके, डेढ सौ मैनेजर के और पच्चास मेरे।``[68] तात्पर्य, सरला के जिस्म-फरोशी के व्यापार में रिसेप्शनिस्ट और होटल का मैनेजर दोनों भी सरला की मदद करने के बदले उससे कमीशन लेते हैं। ऐसी वेश्याओं से ग्राहक सीधा संपर्क नहीं कर सकते। ये वेश्याएँ समाज और घरवालों से छुपाकर शरीर विक्रय करने का व्यवसाय करती है। समाज में पहचानी न जाने के कारण इनकी बदनामी नहीं होती और आगे चलकर ये किसी भी अच्छे युवक के साथ शादी करके अपना घर बसा सकती हैं। प्रस्तुत कहानी की सरला अपने अध्यापक से कहती है - ``आपको यह जानकर खुशी होगी सर, मेरी सगाई एक पायलेट से हो चुकी है। मेडिकल का यह आखिरी साल पूरा करके मैं शादी कर लूंगी और विदेश चली जाऊंगी।``[69] तात्पर्य यह कि सरला के अंदर अभी भी

अच्छे संस्कार मौजूद है। उसके व्यक्तित्व का विचार करने पर स्पष्ट होता है कि भले ही सरला मजबूरी में कॉलगर्ल जैसा व्यवसाय करती है। परंतु एक सुशील लड़की की तरह अपने टूटते परिवार की स्थिति संवारती है। खुद मेडिकल कॉलेज में पढ़ती भी है और अपनी इच्छा के अनुरूप एक पायलट से शादी भी कर रही है। इसी बात से स्पष्ट होता है कि कॉलगर्ल भले ही जिस्म बेचने का व्यापार करती है परंतु एक प्रकार से उनके अंदर अच्छा बनने की ललक भी मौजूद होती है। सिर्फ उन्हें मौक मिलना चाहिए।

ग. भटकती वेश्याएँ :-

इस प्रकार की वेश्याएँ कॉलगर्ल की अपेक्षा निम्न कोटि की मानी जाती हैं। ये वेश्याएँ समुद्री किनारा, बगीचा, सिनेमा हाऊस आदि जगहों पर भटकती रहती हैं। किसी भी पुरूष को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। साधारणत: इनका काम इशारों के माध्यम से होता है। इन वेश्याओं की कॉलगर्ल की तरह होटल या किसी भी लॉज से सांठ-गांठ नहीं होती और न ही उनके पास देह-व्यापार के लिए उपयुक्त जगह होती है। अपने निवासस्थान से दूर अपना देह-विक्रय करनेवाली, ये वेश्याएँ अपने घर में तो साधारण-सा जीवन बिताती है परंतु समाज में पहचानी जाती हैं। इन वेश्याओं में जादातर ऐसी लडकियाँ होती हैं जो घर से भागी होती है और ऐसी जिनके माता-पिता उनकी जरूरतों पर ध्यान नहीं देते हैं। मंटो की कहानी `नरगिस` की नायिका नरगिस, `प्रेमिका समुद्र और वह लडकी` कहानी की नायिका व यशपाल वैद द्वारा लिखी कहानी की नायिका इस कोटि की वेश्याएँ हैं। ये वेश्याएँ खुद अपने शरीर का भाव लगाती है। जैसे `नरगिस` की नरगीस अपने शरीर की किमत बताती है - ``आप चलना चाहते हैं मेरे साथ? ---पचास रूपये --- हाँ या ना ?``[70] इसी प्रकार `प्रेमिका समुद्र और वह लड़की` की नायिका अपना भाव बताती हुई कहती है - ``सौ रूपये लुंगी अगर ---।``[71] तात्पर्य यह कि भटक-भटक कर शरीर बेचनेवाली वेश्याएँ खुद ग्राहक से संपर्क करती हैं। अपने शरीर की कीमत भी खुद ही लगाती हैं। भाव पसंद आने पर काम के पहले ही पैसे लेकर उसके साथ जाती हैं। भाव पसंद न पडने पर दूसरे ग्राहक को ढूंढती रहती हैं। इन वेश्याओं की मजबूरी होती है कि वे अपने निवास स्थान पर किसी भी ग्राहक को नहीं लाती। जैसे मकबुल नरगिस को उसके घर जाने की इच्छा व्यक्त करता है तो वह कहती है - ``वहाँ यह काम नहीं होता।``[72] अत: स्पष्ट है कि अपने घर-परिवार की बदनामी होने के डर से ये वेश्याएँ बाहर ही अपना व्यवसाय करती हैं। क्योंकि इनके पास सुरक्षित जगह का अभाव होता है। जिस्म-फरोशी करते समय उन्हें पुलिस का भी डर होता है। पुलिस द्वारा पकडी जाने पर उन्हें जेल भी होती है। `प्रेमिका समुद्र

और वह लड़की` की नायिका पुलिस से डरती है। अत: वह अपने ग्राहक से कहती है - ``उठना नहीं चाहते क्या ? ---- अभी डंडा वर्दीवाला चक्कर लगाने लगेगा।``[73] अत: स्पष्ट है कि ग्राहक की तलाश में भटकती इन वेश्याओं को कानून का तथा समाज का भी डर होता है।

घ. घर ही में वेश्यावृत्ति करनेवाली वेश्या :-

इस कोटि की वेश्याएँ किसी मध्यस्थ आदमी के द्वारा लाए ग्राहक के साथ ही यौन-संबंध रखती हैं।ये वेश्याएँ न तो ग्राहक की तलाश करने जाती हैं और न किसी अपरिचित व्यक्ति के साथ शरीर का सौदा करती हैं। इनका बाहरी व्यक्तित्व सामान्य नारी की ही तरह होता है। समाज में उन्हें इज्जत और सम्मान भी प्राप्त होता है। इनके ग्राहक प्राय: उच्च वर्ग के लोग होते हैं। बलबीर त्यागी की कहानी की नायिका केतकी इसी कोटि की वेश्या है। इनके यहां समाज के प्रभावशाली व्यक्तियों का आना-जाना होता है अत: इन्हें कानून का कोई डर नहीं होता। अशोक गुप्ता की कहानी `काली खूशबू का फूल` की अदिति पति की पदोन्नति हेतु उच्चधिकारियों के साथ अपने शरीर का सौदा करती है। इस तरह उसका पति उसी के ही घर में बड़े-बड़े लोगों को ग्राहक के रूप में लाता है। प्रभावशाली व्यक्तियों से प्राप्त संरक्षण और प्रोत्साहन के कारण इन्हें कानून का कोई डर नहीं होता। अदिति कहती है - ``उस दिन जब मै अस्थाना के बेडरूम में बेहोश पड़ी किसको अपनी देह की आहुति अंतिम बार दे रही थी, पुलिस का छापा पड़ा था और दस्ता बाहर खड़ी जीप देखकर चुपचाप वापस चला गया था। पुलिस कमिश्नर मेरे साथ थे, और मिस्टर नारंग, जिन पर बैंक से भारी गबन का मुकदमा चल रहा था।``[74] इसी प्रकार राधेश्याम द्वारा लिखी कहानी `बाजार` की नायिका अपने घर ही में देह-व्यापार करती है, जिसके पास समाज में रहनेवाले प्रतिष्ठित लोग आते हैं।

ङ रखैल वेश्याएँ :-

इस कोटि की वेश्याएँ हर जगह पाई जाती हैं। इन वेश्याओं की विशेषता ये होती है कि जो भी आदमी उनकी जरूरतें पूरी करता है, अंततक उसी की बनी रहती हैं। इस प्रकार की वेश्याएँ शहर में अपना अलग घर लेकर रहती है। और अभिभावक की इच्छा के अनुसार उसे शरीर सुख प्रदान कर, खुश करती है। योगेश सूरी के अनुसार - ``रखैल वेश्या वह है जो कि एक ही पुरूष की रखैल मानी जाती है। एक पुरूष द्वारा छोड़ दिए जाने पर तथा निश्चित अवधि तक किसी अन्य पुरूष से सम्बन्ध स्थापित नहीं

करती। इस प्रकार की वेश्याएँ बड़े-बड़े शहरों में अपना मकान लेकर रहती हैं और सामान्य जीवन व्यतीत करती है।``[75] राकेश तिवारी की `बाबू के लिए` कहानी की चंदा को पति के मर जाने के बाद बाबू की रखैल बनती है। और उसी के घर में रहती है। उस आदमी की इच्छा की खातिर अपने पेट में पलने वाली पति की संतान को भी समाप्त करती है। जैसे -``फिर ठीक है बाबू, जब आप सच कह रहे हो तो जैसा कहोगे वैसा ही हम मानेंगे।``[76] तात्पर्य यह कि अभिभावक की खुशी के लिए रखैलियों को बड़ा-से-बड़ा त्याग भी करना पड़ता है। और वे खुशी-खुशी त्याग करती हैं।

च. होटलों की वेश्याएँ :-

इस कोटि की वेश्याएँ एक निश्चित होटल में नौकरी करने के साथ-साथ होटल में आये ग्राहकों को अपना शरीर बेचने का व्यवसाय भी करती हैं। योगेश सूरी के अनुसार ``इन्हें साधारण कॉलगर्ल से ऊँची श्रेणी में गिना जाता है। इन वेश्याओं का बाहरी जीवन सामान्य नारी की तरह होता है इसीलिए ऐसी वेश्याएँ प्राय: समाज की दृष्टि से छिपी रहती हैं।``[77] तात्पर्य यह की समाज को दिखाने के लिए ऐसी वेश्याएँ होटलों में नौकरी करती हैं। नौकरी के आड में ये देह-विक्रय करने का काम करती हैं। इसी कारण समाज में इन पर कोई उंगली नहीं उठाता। उनका असली व्यवसाय `शरीर-विक्रय` समाज की नजरों से छिपा रहता है।

वर्तमान काल में बडे-बडे होटलों में कॅब्रे डान्सर के रूप में नौकरी करनेवाली युवतियों को इस कोटि की वेश्याओं के अंतर्गत रखा जाता है। ऐसी युवतियाँ नाच-गाने की आड में अपने शरीर की नुमाईश करती रहती हैं। प्रदीप अग्रवाल द्वारा लिखी `ठंडा गोश्त` कहानी की लिली नाच-गाने के नाम पर अपना नंगा बदन लोगों को दिखाकर तथा लोगों के शरीर को सटाकर लोगों को खूश करने का प्रयास करती है। जैसे - ``लडकी प्लेटफॉर्म पर थिरकने लगी थी। म्युझिक इतना तेज था कि कानों को फाड ही डाले। वैसा ही तेज था लड़की के अंग-प्रत्यांगों का तोड-मरोड़। सारा बदन स्थिर है और कूल्हे मटक रहे हैं या छातियाँ उछल रही हैं।``[78] तात्पर्य, नाचगाने के नाम पर अपने उन्मादक अंगों को उछाल-उछालकर लोगों को आकृष्ट करना यही इन लडकियों का धंधा है। उनके इस कर्म के कारण रंगिन मिजाज के लोगों की चहल-पहल बढ़ जाती है। और होटल की आमदनी में वृद्धि होती है।

छ. तवायफ :-

इस कोटि की वेश्याएँ कोठों पर नाच-गाने के साथ-साथ जिस्म बेचकर धनार्जन करती हैं। प्राचीन काल में कला के बलबूते पर अपनी जीविका चलाने वाली ये तवायफें आज अपना जिस्म बेचकर पेट पालने लगी हैं। इसका कारण यह है कि वर्तमान स्थिति में कई बडे घरों की युवतियाँ इन कलाओं को आत्मसात कर रही हैं। और दूसरा वैज्ञानिकता के कारण मनोरंजन के साधनों में वृद्धि हो गई है। अत: कला के भरोसे जीवन-यापन करनेवाली यह तवायफ शरीर बेचकर जीवन-यापन करने लगी है। आज बड़े-बड़े नगरों में जलसों के रूप में इन वेश्याओं का व्यवसाय चल रहा है। इन वेश्याओं का असर समाज की सभी इकाइयों पर होता है अत: कुछ सुधारवादी प्रवृत्ति के लोग समाज से इनका अस्तित्व समाप्त करने का प्रयास करते हैं। राकेश कपुर की कहानी `जरीना` की चर्चा सारे शहर के साथ-साथ स्कूल के बच्चों में भी होने लगती है तो स्कूल के प्रिंसिपल केलाजी जरीना को शहर से खदेडने का बिड़ा उठाते हैं। जैसे- ``मेरा काम वैसे इन घटिया `पचेड़ा` में पड़ने का नहीं है, मगर मुझे लगता है कि अब यह चिंगारी मेरे स्कूल में ही लग गयी है। ये तो अन्र्थ हो जायेगा।``[79] तात्पर्य यह कि स्कूल के बच्चों में जरीना के कारण बुरी प्रवृत्तियाँ निर्माण होती है। अत: उनका नैतिक पतन न हो इस दृष्टि से केलाजी जरीना को शहर से बाहर निकालने का प्रयास करने लगते हैं।

तवायफ अपनी सुरक्षा तथा व्यवसाय चलाने के उद्देश्य से शहर के प्रसिद्ध तथा प्रभावशाली व्यक्ति तथा कानून के मुहाफिजों के साथ अपने संबंध बनाए रखती है। जैसे -``जरीना के अब तीन मुवक्किल हो गये --- सरफराज मियां, किशनलाल और अशफाक हुसैन।``[80] यहां एक बात स्पष्ट होती है कि पुलिस समाज और कानून की रक्षा के लिए होती है परंतु तवायफ के रंग में रंगकर अशफाक हुसैन जैसा पुलिस अधिकारी अपने फर्ज के साथ गद्दारी करता है और समाज व्यवस्था की रक्षा करने की अपेक्षा वर्दी का रौब जमाकर जरीना जैसी तवायफ को पीडित करता रहता है। उसका आर्थिक और लैंगिक शोषण करता है। अशफाक का असली रूप लोगों को बताते हुए एक नागरिक कहता है - ``वो क्या करेगा सफाई, वो तो खुद उस गंदगी में जाकर धंस गया है। रोज रात को अशफाक हुसैन जरीना के कोठे पर जाता है।``[81]

कोठे पर गाना गानेवाली औरत पर अपना रोब जमाने के लिए लोग दोनों हाथों से धन

लुटाते हैं। साथ ही आपस में झगड़ने भी लगते हैं। तवायफ के लिए एक दूसरे को मारने-मरने पर उतारू होते हैं। इन लोगों के आपसी संघर्ष के बीच इन तवायफों का भी नुकसान होता है। कई बार उसकी जान को भी खतरा हो सकता है। प्रस्तुत कहानी में सरफराज मियां जरीना के साथ चलने के लिए इन्कार करने पर उसके मुँह पर तेजाब फेंकता है। जैसे -``तोजाब सरफराज मियां ने फिंकवाया था, क्योंकि एक दिन अशफाक हुसैन की मौजूदगी में जरीना ने सरफराज के यहां जाने से इनकार कर दिया था।``[82] तात्पर्य यह कि अपना व्यवसाय चलाने हेतु साथ ही सुरक्षा हेतु इन प्रभावशाली आदमियों के साथ संबंध जोडने से कभी-कभी `तवायफें` जरीना की तरह इन्हीं लोगों द्वारा पीडित होती हैं।

तवायफों के संबंध अनेक रईसों के साथ रहते हैं। साथ ही नाजायज ताल्लुकात भी। इसका नतिजा संतोत्पति होती है। पैदा होनेवाली अगर बेटी होती है तो वह इनकी बुढ़ापे का सहारा बन जाती है। माँ की तरह ही वह कभी नाचगाना करके तो कभी अपना जिस्म बेचकर अपनी बुढ़ी मां की परवरिश करती है। इन लडकियों को कला की ऊँची तालिम दी जाती है। जवान होने पर एक समारोह का आयोजन करके किसी रईस आदमी से मनचाहा धन लेकर उसकी नथ उतारी जाती है और उन्हें इस धंधे में लाया जाता है। उचित दाम न मिलने तक तवायफ अपनी बेटी की नथ उतारने का कार्य नहीं करती। मंटो की कहानी `ईदन` की जोहराजान अपनी बेटी ईदन की नथ उतराई की अच्छी कीमत आने तक इंतजार करती है। जैसे -``वह चाहती थी कि नथनी की रस्म बडे धूम-धाम से हो ताकि वह ज्यादा से ज्यादा कीमत वसूल करें।``[83] तात्पर्य यह कि तवायफ अपनी बेटियों का घर बसाने के बजाय उन्हें अपने तरह ही अपने पारंपारिक वेश्यावृत्ति के व्यवसाय में लगा देती हैं।

तवायफों की नजर अक्सर धनवालों पर होती है क्योंकि उनक व्यवसाय ही इन लोगों के भरोसे चलता है। कई तवायफें ऐसी भी होती हैं, जो अपने इस परंपरागत व्यवसाय से उब जाती हैं। अत: शादी करके अपना घर बसाने का विचार करती हैं। परंतु कोई भी इज्जतदार आदमी इनसे विवाह करने के लिए तैयार नहीं होता। जो इन तवायफों के साथ विवाह करने के लिए तैयार होते हैं वे कानून और समाज दोनों के मुजरिम होते हैं। अत: इनके साथ तवायफ शादी करके मुश्किल में पड़ना नहीं चाहती। ईदन के साथ जफर शाह विवाह करना चाहता है। ईदन के प्रेम में पागल वह अपनी सारी दौलत उसके नाम कर देने को तैयार है परंतु ईदन उसके साथ विवाह करने के लिए तैयार नहीं होती। जैसे- ``अगर वह उससे शादी कर ले तो वह अपनी सारी जायदाद उसके नाम करने को तैयार है। मगर ईदन न मानी।``[84] तात्पर्य, जफर

शाह गुंडा होने के कारण इदन उसका भरोसा नहीं करती अत: उसके साथ विवाह करने से इन्कार कर देती है। ईदन तो कादरा के साथ शादी करना चाहती है। क्योंकि कादरा उसे पसंद है। वह कादरा से बिनती करती है। उसके पैर पकड़ती है परंतु फिर भी कादरा उसके साथ विवाह करने के लिए तैयार नहीं होता। कादरा के पैर पड़ती हुई ईदन कहती है - ``खुदा के लिए मुझ पर इनायत करो। मैं दिलों-जान से तुम पर फिदा हूँ। तुम इतने जालिम क्यों हो ?``[85] तात्पर्य यह कि ईदन को अच्छे-बुरे की अच्छी पहचान है वह अपने पीछे दौलत लेकर भागनेवाले जफर शाह को ठुकराकर अपने साथ शादी करने के लिए गरीब कादरा कसाई से बिनती करती है। उसके पैर पकड़ती है।

वेश्याओं के उक्त प्रकारों का विवेचन करने के उपरांत निम्नलिखित तथ्य सामने आते हैं -

1. कोठे की वेश्याएँ एक निश्चित स्थान पर अपना व्यवसाय करती हैं।
2. देह व्यापार में कोठे की वेश्याओं की अपनी कोई पसंद नहीं होती। जो भी आदमी चाहे, धन देकर उसे खरीद सकता है।
3. कोठे की वेश्याओं की बहुत-सी कमाई कोठे के मालिक के हाथों में जाती है।
4. इन वेश्याओं को कानून से बचने के लिए जिस्म व धन के रूप में पुलिस को रिश्वत देनी पड़ती है।
5. कॉलगर्ल अपनी मर्जी के अनुसार ग्राहकों का चुनाव करती हैं।
6. कॉलगर्ल की आमदनी कोठे की वेश्याओं की अपेक्षा ज्यादा होती है।
7. कॉलगर्ल का व्यवसाय दलालों के माध्यम से चलता है।
8. इन वेश्याओं का बाहरी जीवन सर्वसामान्य नारी जैसा होता है। अत: ये समाज में पहचानी नहीं जाती।
9. इन वेश्याओं को अपनी कमाई में से कुछ धन होटल मैनेजर और कर्मचारियों को कमिशन (दलाली) के रूप में देना पड़ता है।
10. भटकंती करनेवाली वेश्याएँ ग्राहकों से खुद संपर्क करती हैं। इनके पास व्यवसाय करने के लिए

सुरक्षित जगह की समस्या होती है। ये वेश्याएँ काम के पहले तय की हुई रक्कम ग्राहक से वसूल करती हैं।

11. होटलों की वेश्याएँ दिखावे के लिए होटल में नौकरी करती हैं परंतु इनका मुख्य व्यवसाय होटलों में ठहरे ग्राहकों को जिस्म बेचना होता है। ये वेश्याएँ साधारण कॉलगर्ल की उच्च कोटि श्रेणी की मानी जाती हैं। इन्हें समाज में पहचानना कठिन होता है।

12. रखैल वेश्या अपनी जरूरतें पूरी करनेवाले आदमी के साथ यौवन संबंध रखती है। उस आदमी के छोड देने पर वे दूसरे आदमी का सहारा लेतो हैं। ऐसी वेश्याएँ शहर में अपने अलग घर में रहती हैं।

13. घर में ही वेश्यावृत्ति करनेवाली वेश्याएँ दलाल के द्वारा लाए विश्वसनीय ग्राहक को ही ग्राहक के रूप में स्वीकारती हैं। ये वेश्याएँ किसी भी अंजान आदमी के साथ शरीर विक्रय का व्यवहार नहीं करती। इनका बाहरी व्यक्तित्व सामान्य नारी की तरह होता है और समाज में इनकी इज्जत होती है। प्राय: इनके ग्राहक समाज के प्रभावशाली, धनवान लोग और कानून के बडे-बडे अफसर होते हैं।

14. तवायफ नाच-गाने के साथ-साथ अपना जिस्म बेचकर भी धनार्जन करती है। इन औरतों के बुढ़ापे का सहारा इनकी बेटियाँ होती हैं जो जवान होने पर अपनी मां के व्यवसाय को ही अपनाती हैं।

वेश्याओं की समस्या :-

समस्याओं से यहाँ तात्पर्य उन कठिनाइयों से है जो वेश्यावृत्ति करते समय वेश्या नारी के सामने उपस्थित होती हैं। इन वेश्याओं के सामने आनेवाली समस्याओं का संकेत आलोच्य कहानियों में मिलता है, जिसका विवेचन यहां प्रस्तुत किया है ÷

क. नैतिकता की समस्या :-

वेश्यावृत्ति को समाज द्वारा घृणित माना जाता है। समाज इन वेश्याओं का अस्तित्व सहन नहीं करता। यह सही बात है कि वेश्याओं के कारण समाज का नैतिक पतन होता है। इनके कारण जवान तो जवान बूढे और बच्चों पर भी बुरा असर पड़ता है। इनका नैतिक पतन होता है। बच्चों में भी

क इनकी चर्चा होती है। राकेश कापुर द्वारा लिखी कहानी `जरीना` की तवायफ जरीना की पूरे शहर में तो

चर्चा होती है परंतु इस चर्चा का परिणाम स्कूल के बच्चों पर होता है और उनमें भी जरीना चर्चा का विषय बनती है। बच्चे गांव के पुरूषों के साथ जरीना का नाम जोडने लगते हैं। जैसे - ``रात मेरे पिताजी मेरी मां से कै रये थे कि तेरा बाबा जरीना के घारै जावे।``[86] तात्पर्य यह कि घर में माता-पिता की बातें सुनकर बच्चे स्कुल में भी जरीना का विषय छेड़ते हैं। अत: इन बातों से उनका नैतिक पतन होता है। वे कुमार्ग की ओर चल पड़ते हैं।यहां सभी दोष वेश्याओं का नहीं होता।परंतु समाज में उन्हें ही दोषी ठहराया जाता है। जैसे - ``ये गंदगी जब तक शहर में रहेगी, शरीफ बहू-बेटियों का घर से निकलना ही मुश्किल हो जायेगा।``[87] अत: स्पष्ट है कि समाज के नैतिक पतन के लिए वेश्याओं को दोषी ठहराया जाता है और उन्हें समाज से बेदखल करने का प्रयास किया जाता है। इससे वेश्यावृत्ति में वेश्याओं के सामने अनेक कठिनाइयाँ खड़ी रहती हैं। अत: स्पष्ट है कि नैतिकता को लेकर वेश्याओं के सामने बहुत बड़ी समस्या आती है।

ख. ग्राहक से उत्पन्न समस्या :-

वेश्याओं के पास प्राय: अविवाहित और ऐसे लोग आते हैं जिन्हें पत्नी से पूर्ण सुख की अनुभूति नहीं होती। अत: ऐसे लोग पैसे देकर वेश्याओं के द्‌वारा वह सुख प्राप्त करने की कोशिश करते हैं जो अपनी पत्नी से प्राप्त नहीं होता। वेश्याओं के पास जानेवाले ग्राहकों में कुछ गुंडा किस्म के ग्राहक भी होते हैं जो अपनी हवस तो मिटाते हैं परंतु पैसे नहीं देते। इसके अलावा कानून के मुहाफिज भी अपनी वर्दी का रौब दिखाकर मुफ्त में इन वेश्याओं का लैंगिक शोषण करते हैं। `जरीना` कहानी में पुलिसवाला अशफाक हुसेन अपनी दरोगाई की रौब दिखाकर जरीना को भोगता है।

वेश्यावृत्ति करने के दौरान वेश्याओं के सामने ऐसे भी ग्राहक आते हैं जिनसे वे शरीर का सौदा नहीं कर सकती। इन ग्राहकों के साथ इनके कुछ नाजूक संबंध होते हैं। और वेश्या नहीं चाहती कि वे लोग ग्राहकर बनकर उनके शरीर का भोग ले। सत्येंद्र त्यागी की कहानी `शट अप सर !` में सरला के सामने ग्राहक बनकर उसके अध्यापक ही आते हैं। `केतकी` कहानी में केतकी के पास वही युवक आता है जिसके चाचा केतकी के पास आते हैं। काम-तृप्ति के उद्‌देश्य को लेकर आये ऐसे ग्राहकों को सामने देख कर इनके दिल को ठेस पहुँचती है। कुछ ग्राहक तो ऐसे भी होते हैं जो वेश्याओं के इश्क में फंसते हैं और उन्हें अपनी बनाना चाहते हैं। `बाजार` कहानी की नायिका इसी समस्या से परेशान होकर पवन से कहती है - ``यार तुम्हारे दोस्त हुसैन ने तो गले में मुसीबत डाल दी। उसका बॉस मुझ पर इस कदर आशिक है कि

मुझे छोडने को तैयार नहीं। कहता है `तुम सिर्फ मेरी होकर रहो - वह पागल हो गया है।``[88] अत: स्पष्ट है कि इन ग्राहकों को वेश्या पसंद नहीं करती क्योंकि इनके कारण उनके दूसरे ग्राहकों पर असर पड़ता है।

कभी-कभी वेश्याओं को ऐसे ग्राहक का सामना भी करना पड़ता है जो पर-पीडा कामूक होते हैं। अपनी सेक्स की भावना वे नारी को असहनीय पीड़ा पहुँचाकर शांत करते हैं। प्राय: ऐसे ग्राहकों पर बचपन की किसी भयानक घटना का बुरा असर पड़ा हुआ होता है जिसके कारण उनकी मानसिक हालत बिगड जाती है। नेल्सन एल्ग्रेन की कहानी `तुम्हारी चाहत बस एक रात की` में वेश्या के कोठे पर आया एक नौसेना का अधिकारी अपनी काम-तृप्ती के बारे में बताता है - ``मैं अपनी भोगेच्छा पूरी करने के लिए यहां आया हूँ मेरी भोगेच्छा न तुम पूरी कर सकती हो, न कोई और लड़की।``[89] अत: स्पष्ट है कि इस नौसेना अधिकारी की कामेच्छा किसी अनैसर्गिक मार्ग से ही पूरी होती है। अपनी इस हालत के बारे में नौसेना अधिकारी कहता है - ``मेरी मम्मी मुझे बहुत मारती थी, मार-मारकर मुझे नीला कर देती थी। और जब वह अपंग हो गई, तो मैंने उससे बदला दिलया, उसे खूब पीट-पीट कर, और चूंकि वह अपंग थी इसीलिए मेरी मार सहने के लिए मजबूर थी।``[90] प्रस्तुत उद्धरण से स्पष्ट होता है कि नौसेना का अधिकारी पर-पीड़ा कामूक है। यह आदत उसे अपनी मम्मी के कारण लगती है। अपनी इस काम-पीड़ा के तृप्त करने के लिए वह कोठों पर अपनी मम्मी जैसी दिखाई देनेवाली वेश्या को ढूंढता है। और उसे पीडित करके अपनी काम-वासना तृप्त करता है। औरत को पीडित किए बिना उसकी तृप्ति नहीं होती। प्रस्तुत कहानी की हैली मादाम से कहती है - ``मैं क्या कोई भी छोकरी उसे तृप्त नहीं कर सकती उसे आपकी जररूत है। वह जब आप को पीटते-पीटते थक जायेगा, तो उसकी काम-वासना तृप्त हो जायेगी।``[91] तात्पर्य यह कि विकृत मानसिकतावाले ग्राहकों के हंटर, मार सहना वेश्याओं की मजबूरी है। ऐसे ग्राहकों से निपटने की बहुत बड़ी समस्या वेश्याओं के सामने होती है।

ग. दलाल एक समस्या :-

वेश्या व्यवसाय में दलालों की बहुत ही अहम् भूमिका होती है। ग्राहकों को पटाकर लाने के बदले ये लोग वेश्या से दलाली (कमिशन) प्राप्त करते हैं। ऐसे दलालों की जरूरत उन वेश्याओं को होती है जो समाज से बचकर देह-व्यापार करती हैं। इन दलालों का वेश्या पर अधिकार होता है वे मनचाहा व्यवहार इन वेश्याओं के साथ करता है। `बाजार बंद` कहानी में गिरधारी लाल वेश्या की दलाली करता

है। उसके संबंध में - ``वह साहब लोगों की तबियत पहचानता था और छोकरियाँ उसे खूब जानती थी। उसके सामने ज्यादा चू-चपड करने की हिम्मत कोई न जुटा पाता। वह जिस पर भी हाथ रख दें, समझो वही हलाल !``[92] तात्पर्य यह कि पुलिस की सहाय्यता मिलने के कारण गिरधारी लाल अपना रोब जमाने के लिए वेश्याओं को पीड़ित करता है। कई बार तो दलाली (कमीशन) को लेकर वेश्या और दलाल के बीच झगडे होते हैं। `बाजार` कहानी में चित्रित वेश्या बंतु दलाल के साथ कमिशन को लेकर झगड़ती है। बंतु अपना कमीशन पचास रुपये मांगता है तो वह कहती है- ``तू झूठ कहता है। पचास पर तो तेरे मुँह पर भी न थूंकती ---- तेरा चेहरा बिगाडकर रख देती अब तू क्या कहता है, बोल --- या चिल्लाना शुरू करूँ ?``[93] तात्पर्य यह कि तयशुदा कमीशन से अधिक कमीशन मांगने के कारण वेश्या और दलाल आपस में झगडते हैं। अत: इन दलालों के साथ निपटने की एक समस्या वेश्याओं के सामने है। इनकी जरूरत भी होती है और इनके कारण वेश्या के व्यवसाय पर भी असर पड़ता है।

घ. जगह की समस्या :-

वेश्यावृत्ति के व्यवसाय के लिए सुरक्षित जगह की आवश्यकता होती है। जो वेश्याएँ स्वतंत्र रूप से व्यवसाय करती हैं उनके सामने जगह की समस्या होती है। भटक-भटक कर ग्राहकों की तलाश करने के बाद उसी के निश्चित किए स्थान पर ये वेश्याएँ शरीर-विक्रय का काम करती हैं। वास्तव में समाज और परिवारवालों से छुपाकर व्यवसाय करनेवाली वेश्याओं के सामने जगह की समस्या का प्रश्न होता है। मंटो द्वारा लिखी `नरगिस`, विभांशु दिव्याल द्वारा लिखी `प्रेमिका, समुद्र और वह लडकी`, यशपाल वैद की लिखी `स्थितियाँ`, राधेश्याम की लिखी `बाजार` आदि कहानियों में वेश्यावृत्ति करने के लिए वेश्या के सामने प्रस्तुत होनेवाली जगह की समस्या पर प्रकाश डाला गया है।

ङ बॉस एक समस्या :-

बॉस उस औरत के लिए शब्दप्रयोग किया जाता हे जो वेश्याओं का कोठा चलाती है। अत: प्रस्तुत समस्या कोठे पर रहकर देह-विक्रय करनेवाली वेश्याओं के सामने आती है। इन औरतों को वेश्याओं द्वारा विविध नामों से जाना जाता है। जैसे- मम्मी, बाईजी, मादाम आदि। ये औरते जवानी में देह विक्रय करती है और बुढ़ापे में वेश्याओं को इकठ्ठा कर कोठा चलाती हैं। कोठे पर आये ग्राहकों को लडकियाँ दिखाने के साथ-साथ इन वेश्याओं की सुरक्षा का भार भी इन औरतों के जिम्मे होता है। इस

प्रकार की औरतें वेश्याओं द्वारा प्राप्त धन पर नजर रखती हैं। धन कमाने हेतु एक-एक लडकी को ज्यादा से ज्यादा ग्राहक निपटाने के लिए प्रवृत्त करती है। कोई वेश्या अगर वेश्यावृत्ति को छोड़ना चाहती है तो सबसे बड़ी रूकावट यही बॉस होती है। सुभाष अखिल की कहानी `बाजार बंद` की जरीना को शामें कोठे से निकालना चाहता है परंतु कोठे की `ताई` को यह बात खटकती है। वह गिरधारी लाल के कान भरती है - ``सच कहूँ भैया, जो ये छोकरी चली तो सोना बरसा दे मेरे कोठे पर।----मेरे साहब लोग भी जीते-जी जन्नत देख लै।``[94] तात्पर्य यह कि इन औरतों का मतलब सिर्फ धन कमाने से होता है। वेश्याओं के आय में से सीमित आय उनके पास रखकर सारा धन खुद बटोरती हैं। उनके पाले हुए गुंडे भी होते हैं जिनका उपयोग इन वेश्याओं को धंधे पर लगाने हेतु किया जाता है। अत: स्पष्ट है कि अपना शरीर बेचनेवाली वेश्याओं के सामने ऐसी बॉस औरतों की भी एक समस्या होती है।

च. पुलिस और कानून की समस्या :-

वेश्यावृत्ति करनेवाली औरतों के सामने पुलिस द्वारा छापा मारने की समस्या होती है। इन्हें पुलिस से बचकर ही देह-विक्र करना पडता है। कुछ वेश्याएँ पुलिसवालों को हप्ता देकर उनसे धंधे की अनुमति लेकर धंधा करती हैं। ये पुलिस कर्मचारी जब चाहे वेश्या के पास आकर अपना हप्ता वसूल कर लेते हैं। नेल्सन एल्ग्रेन की कहानी `तुम्हारी चाहत बस एक रात की` में किटी के द्वारा लेखक ने पुलिस की इस प्रवृत्ति का चित्रण किया है। जैसे- ``वह सोचती थी पुलिस के बारे में जो कभी भी उसकी काढ़ी कमाई में से अपना `हिस्सा` वसूलने और कुछ मिनटों के लिए उसे रोंदने के लिए चली आती थी।``[95] तात्पर्य, पुलिस के मुहाफिज अपनी वर्दी तथा कानून के साथ गद्दारी कर, इन वेश्याओं से हप्ता लेते हैं। साथ ही वर्दी का रोब दिखाकर अपनी कामवासना भी इन वेश्याओं से तृप्त कर लेते हैं।

पुलिस के डर के कारण आज-कल लोग वेश्या के पास नहीं जाते। अत: इन वेश्याओं के पास जानेवाले ग्राहकों की संख्या कम होती जा रही है। रमेश बत्तरा की `चकले का चरित्र` कहानी में चंद्राबाई कहती है- ``उन्हें बाई के तलवे चाटने में शर्म नहीं आती लेकिन पुलिस से साबका पड़ते ही मां मर जाती है सबकी। कई लोगों ने तो आना ही छोड दिया है।``[96] अत: स्पष्ट है कि पुलिस भी इन औरतों को सताती है। उनसे हप्ता लेती है। उनके शरीर को रौंदकर अपनी कामवासना तृप्त करती है।

उपर्युक्त कहानियों के साथ-साथ राकेश कपुर की `जरीना` सुभाष अखिल की `बाजार

बंद`, विभांशु दिव्याल की `प्रेमिका, समुद्र और वह लडकी`, सलीम खां गम्मी की `धरवादी` आदि कहानियों में पुलिस तथा कानून के कारण निर्माण होनेवाली समस्या का संकेत मिलता है।

छ. शोषण की समस्या :-

शोषण की समस्या वेश्या के सामने प्रस्तुत होनेवाली प्रमुख समस्या है। पुलिस, दलाल, डॉक्टर, नेता तथा गुंडे व जिनके आश्रय में वे रहती हैं उस कोठे के मालिकों द्वारा वेश्या नारी का आर्थिक और लैंगिक शोषण किया जाता है। वेश्या के शोषण के संबंध में नेल्सन एल्ग्रेन ने अपने विचार प्रकट किये हैं। जैसे- ``वह सोचती थी पुलिस के बारे में जो कभी भी उसकी गाढ़ी कमाई के पैसों में से अपना `हिस्सा` वसूलने और कुछ मिनट के लिए उसे रौंदने के लिए चली जाती है---उन राजनैतिक नेताओं के बारे में, जो उसका पूरा `इस्तेमाल` करने के बाद अपने भाषणों में उसका विरोध करते थे --- डॉक्टरों के बारे में, जो उससे दुगुनी फीस वसूल करके भी उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे। ---दलालों के बारे में, जो हमेशा उसके खिलाफ उसे लूटने की साजिशों में लगे रहते हैं।``[97] तात्पर्य यह कि वेश्या का शोषण समाज के हर उस घटक के द्वारा किया जाता है जो इस व्यवसाय से संबंधित होते हैं। वेश्याओं का आर्थिक शोषण किस प्रकार किया जाता है। और इस शोषण के बाद उनके पास कितना कम धन रहता है, इस बारे में सुभाष अखिल ने `बाजार बंद` कहानी में अपने विचार व्यक्त किए हैं- ``एक लड़की, एक ग्राहक से औसतन दस रूपये लेती और एक दिन में लगभग सौ रूपये तक पैदा कर देती। यह आय सीधी कोठेवाली तक पहुँचती, जो इस व्यवसाय का केंद्र थी। इसी केंद्र से जब इस आय का बटंवारा होता तो एक कोठे से, एक दिन पांच सौ रूपये पुलिस के इतना ही रोज का खर्चा, सौ रूपये अमीर की दलाली, दो सौ रूपये केंद्र के- यानी लड़की, एक दिन में पंद्रह-बीस रूपये ही समेट पाती।``[98] तात्पर्य, वेश्यावृत्ति के व्यवसाय में जो महत्त्वपूर्ण घटक `वेश्या` है, जो अपने शरीर पर हर दिन पुरूषों से मिलनेवाली पीड़ा और यातनाओं को झेलती है। उन्हें ही उनके शरीर की कीमत न के बराबर मिलती है। परंतु उनके ऊपर अपना हक जतानेवाले उनके व्यवसाय से संबंधित लोग बिना कुछ किए इनसे जादा धन प्राप्त करते हैं। अत: स्पष्ट है कि शारीरिक और आर्थिक शोषण के कारण वेश्या कंगाल की कंगाल ही रहती है।

ज. गुंडा तत्व एक समस्या :-

वेश्याओं के पास जानेवाले ग्राहकों में जादातर गुंडे और मवाली किस्म के लोग आते हैं।

अत: वेश्याओं को हमेशा इन लोगों का सामना करना पड़ता है। अपनी गुंडागर्दी के दम पर ये लोग वेश्याओं पर रोब जमाते रहते हैं। बात-बात पर हथियार निकाल कर उन्हें डराते, धमकाते हैं। अपनी हवस मिटाने के लिए बिना दाम दिए ही उनका शरीर भोगते हैं। सुभाष अखिल की `बाजार बंद` कहानी में गुंडा शामें कोठेवाली `ताई` को धमकाकर जरीना वेश्या का धंधा बंद करवाता है। जैसे- ``तेरी बहन का धंदा माऊ ताई !---- एक मरतबा बोलता हूँ, ध्यान से सुन ले--- अगर इस छोकरी पर कोई दूसरा उतर गया ----तो मैं छह के छह राऊंड तेरे हलक में उतार दूँगा।``[99] तात्पर्य यह कि इन गुंडों का जिस वेश्या पर दिल आए उस वेश्या को वे अन्य ग्राहकों के साथ शरीर-विक्रय करने नहीं देते अत: इन गुंडो के कारण वेश्याओं का धंधा बंद पड़ता है और उनकी आय कम होती है। वेश्या इन गुंडो से बहुत ही प्रभावित है। अत: समाज में स्थित इन गुंडों के कारण उपस्थित समस्याओं का भी वेश्या नारी को सामना करना पड़ता है। इन गुंडा तत्वों के दंगे-फसादों के कारण कोठे पर ग्राहक आने से डरते हैं। रोज-रोज के इन झगडों, दंगों-फसादों के कारण समाज में रहनेवाले शरीफ लोग कोठों पर चलनेवाले इस वेश्या व्यवसाय को बंद करने का प्रयत्न शुरू करते हैं। प्रस्तुत कहानी के अंत में समाज इस बाजार को बंद करने की अपिल करता है। तात्पर्य, गुंडों के कारण अनेक कठिनाइयाँ वेश्याओं के सामने उपस्थित होती हैं।

झ. विवाह की समस्या :-

वेश्या नारी को समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। अत: कोई भी पुरूष उनके साथ विवाह करने के लिए तैय्यार नहीं होता। मंटो की कहानी `ईदन` की तवायफ ईदन कादरा कसाई से शादी करना चाहती है। परंतु कादरा कसाई उसके साथ विवाह करने के लिए तैयार नहीं होता। ईदन उसके पैरों में पड़कर उसकी बिनती करती है कि कादरा उसे अपनाए परंतु कादरा कसाई उसे कहता है ---``जा-जा--- हमने आज तक किसी कंजरी को मुँह नहीं लगाया। मुझे तंग न कर।``[100] तात्पर्य यह है कि कोई भी इज्जतदार आदमी वेश्या के साथ विवाह करने के लिए तैय्यार नहीं होता। कोई गुंड प्रवृत्ति का व्यक्ति या संवेदनशील व्यक्ति अगर इनसे विवाह करे तो समाज में रहनेवाले असामाजिक तत्व इसे स्वीकार नहीं करते। असामाजिक तत्व इन्हें तरह-तरह की यातनाएँ देते हैं, समाज से बहिष्कृत करते हैं। सुभाष अखिल की `बाजार बंद` कहानी में शामें वेश्या जरीना के साथ विवाह करके उसे वेश्यावृत्ति से मुक्ति दिलाता है। परंतु जरीना के हुस्न से पागल पुलिस के मुहाफिज और उसके जिस्म को बेचकर पैसे कमाने की इच्छुक कोठे की मालकीन `ताई` को शामे द्वारा जरीना के साथ विवाह करने की बात नहीं रूचती। अत: ये लोग

शामे को दंगा-फसाद करने के झूठे इल्जाम में फंसा देते हैं। शामे को तीन साल की सजा होती है। शामे जेल जाने के बाद पुलिस जरीना को वेश्यावृत्ति करने के जुर्म में पकड कर ले जाती है। परंतु बजाय इसके कि उसे हवालात में बंद करे, पुलिस अज्ञात स्थान पर ले जाकर उसके साथ पंद्रह दिन तक हवस का खेल खेलते हैं और बाद में उसी कोठे पर धंधा कराने के लिए बिठाती है जिस कोठे से शामें उसे ब्याहकर लाया था। इससे स्पष्ट होता है कि वेश्या नारी अगर विवाह भी करती है तो उसके अतीत के कारण लोग उसे सताते हैं, पीडित करते हैं। कहना न होगा कि वेश्या नारी के सामने विवाह की बात को लेकर भी अनगिनत समस्याएँ प्रस्तुत होती हैं।

ञ. बुढ़ापे की समस्या :-

जवानी में वेश्या अपने जिस्म को बेचकर अपनी जीविका चलाती है। उसके शरीर को भोगने अनेक ग्राहक अपनी जेबे खाली करते हैं। परंतु जैसे-जैसे जवानी ढलने लगती है वैसे-वैसे उसके ग्राहकों की संख्या कम होने लगती है। बुढ़ापा आने पर वह पूरी तरह से इस धंधे से बाहर फेंकी जाती है।ऐसी बुढ़ी औरतें किसी कोठे पर वेश्याओं की देखरेख करने का काम करती हैं। उनसे पास कोई ग्राहक नहीं आते अत: इनकी जीविका दुसरी वेश्याओं के भरोसे चलती है। जब कोई रंगीन मिजाज का ग्राहक उनके शरीर की कामना करता है तो उन्हें खुद अपने शरीर को लेकर शर्म महसूस होने लगती है। नेल्सन एल्ग्रेन की कहानी `तुम्हारी चाहत बस एक रात की` में नौसेना अधिकारी जब बुढ़ी, थुलथुल शरीर की मादाम को अपनी काम-तृप्ति का साधन बनाने की इच्छा व्यक्त करता है तो मादाम कहती है - ``मैं ठहरी एक थुलथुल अधेड औरत। मैं उसे कैसे खुश कर सकुंगी।``[101] इसी तरह रमेश बत्तरा की कहानी `चकले का चरित्र` में कोठे की मालकीन `चंद्राबाई` के साथ यौवन सुख का आनंद लुटने का इच्छुक लाला से चंद्राबाई कहती है - ``क्या कह रहा है लाला--- इतनी जवान---जवान लडकियों के बीच में।``[102] तात्पर्य यह कि शरीर ढल जाने के कारण ये वेश्याएँ अपने आपको किसी ग्राहक को खुश करने में असमर्थ समझती हैं। उन्हें अपने ही शरीर को देखकर शर्म सी महसूस होती है।

वेश्या नारी किसी ग्राहक की चाहत में पूर्ण रूप से उसको समर्पित होती है। परिणामत: उन्हें मातृत्व भी प्राप्त होता है। होनेवाली संतान अगर लडकी होती है तो ये वेश्याएँ उसे अपने बुढ़ापे का सहारा समझ कर उसकी परवरिश करती हैं। जवान होने पर यही लड़कियाँ अपनी मां की तरह जिस्म-

फरोशी का व्यवसाय करने लगती हैं। और अपनी माँ बुढ़ापे का सहारा बनती हैं। मंटो की कहानी `ईदन` में जोहराजान अपनी बेटी ईदन को व्यवसाय में लगाकर उसकी कमाई पर अपना बुढ़ापा गुजारना चाहती है। कई ऐसी भी वेश्याएँ हैं जिनका बुढ़ापे का कोई सहारा नहीं होता। अत: जीविकार्जन के लिए उन्हें या तो भीख मांगनी पड़ती है या फिर छोटा-मोटा काम करके अपना जीवन-यापन करना पड़ता है। ऐसी वेश्याओं को बुढ़ापे में अनेक दु:ख और पीड़ाओं को सहना पड़ता है। गुड्डू गोविंद द्वारा लिए वेश्या के सर्वेक्षण में `निशी` अपने जवाब में कहती है - ``वैसे एक वेश्या की जिंदगी तभी तक है, जब तक वह जवान है। एक बार जवानी ढ़ली नहीं कि समझ लो उसकी मौत आ गई।``[103] तात्पर्य, जवानी के दिनों में ही वेश्या के बहार के दिन होते हैं। जवानी ढ़लने पर उसका जीवन मौत से भी बद्त्तर होता है।

तात्पर्य यह है कि वेश्या का बुढ़ापा बहुत ही दु:खद स्थिति में गुजरता है। कई कोठा चलाती हैं, कई भीख मांगकर अपना पेट पालने पर मजबूर हो जाती हैं तो कई छोटा-मोठा काम करके अपनी गुजरान करती हैं।

ट. स्वास्थ संबंधी समस्या :-

वेश्या नारी को धन प्राप्त करने हेतु अनेक पुरूषों के साथ शरीर का क्रय-विक्रय करना पड़ता है। इस कारण उन्हें शरीर के गुप्त रोगों एव असाध्य रोगों का शिकार होना पड़ता है। इन वेश्याओं के पास जानेवाले काम पीपासू पुरूष भी इन रोगों का शिकार बन जाते हैं। वेश्यानारी के साथ यौन संबंध रखनेवाले ग्राहकों को सिफिलस (फिरंग), गनोरिया, उपदंश और आजकल बहुचर्चित, असाध्य रोग `एड्स` आदि का शिकार होना पड़ता है। इन रोगों के बारे में डॉ. मनोरमा जैन का कथन है - ``ये रोग आरंभिक स्टेज पर तो पूरी तरह से ठीक हो सकते हैं, किंतु जब ये मनुष्य के शरीर को ही अपना घर बना लें तो इनका ठीक होना कठिन हो जाता है।``[104] इन रोगों से पीड़ित लोग डॉक्टरों के पास जाने से कतराते हैं, डरते हैं वे शर्माते हैं। अपने गुप्त रोगों को छुपाने व जल्दी इलाज न करवाने के कारण रोग भयानक बन जाते हैं। सागर सरहदी की कहानी `हमपेशा` में गर्जेंद्र जो कि वेश्या से यौन संबंध रखे हुए था गुप्त रोग का शिकार बन जाता है। उसका मित्र बताता है - ``उसने मुझे बताया कि उसे बीमारी हो गयी है। घरवालों को मालूम हो गया तो अनर्थ हो जायेगा। ----उसकी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। उसने पिछले तीन दिनों में कई डॉक्टरों के बोर्ड पढ़ डाले थे, लेकिन शर्म के मारे वह अंदर नहीं जा सका।``[105] अत: स्पष्ट है कि

शर्म और डर व इज्जत को बचाने की खातिर लोग वेश्या के कारण गुप्त रोगों का शिकार होने पर भी छुपाते हैं। ऊपर निर्दिष्टित कहानी को छोडकर किसी और कहानी में वेश्या के स्वास्थ्य संबंधी समस्या की चर्चा नहीं मिलती है। अत: प्रस्तुत कहानी के आधार पर ही हम कह सकते हैं कि इस प्रकार के घातक रोगों से बचने के लिए लोग वेश्या के पास जाने से कतराते हैं अत: इन रोगों की एक अलग ही समस्या वेश्या नारी के सामने उपस्थित होती है।

वेश्याओं का ऊँचा प्रतिमान :-

साधारणत: वेश्या नारी को धन की लालसा पूर्ति हेतु किसी भी पुरूष को अपना शरीर बेचनेवाली घृणित स्त्री के रूप में देखा जाता है। परंतु समाज यह नहीं सोचता कि हर नारी वेश्या नहीं होती परंतु प्रत्येक वेश्या नारी होती है। अत: इनके सीने में धडकने वाला नारी ह्रदय भी होता है। सुभाष अखिल की कहानी `बाजार बंद` में जरीना दूबारा कोठे पर बिठाई जाती है तो शामे के साथ उसके घर बिवी बनकर नहीं जाती। वह शामे से प्रेम करती है परंतु खुद को उसके काबिल नहीं समझती।

मनुष्य की प्रवृत्ति परिवर्तन चाहती है। उसी प्रकार जिस्म-फरोसी का एक ही व्यवसाय करते-करते कई वेश्याएँ इस व्यवसाय से उब जाती हैं। तथा किसी का सहारा पाने के लिए कोशिश करती हैं। मंटो की कहानी `इर्दन` की प्रमुख पात्र ईदन अपने साथ विवाह करने के लिए कादरा कसाई की बिनती करती है। उसके हाथ पैर पड़ती है।

वेश्यावृत्ति पूरी तरह से ग्राहकों के बलबुते पर चलती है। ग्राहक न आए तो वेश्याओं को पेट भरने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। परंतु कुछ संवेदनशील वेश्या ग्राहकों को सही रास्ते पर लाने की कोशिश भी करती है। बलबीर त्यागी की `केतकी` कहानी की केतकी एक कॉलेज के लड़के को समझाती है जो उसके पास यौवन सुख प्राप्त करने के लिए आता है। ``मैं बेटे की सेज पर चलने का पातक नहीं झेल पाऊँगी। बाप-बेटे की समान रूप से भोग्या नहीं बनूंगी मैं।``[106] तात्पर्य केतकी के पास ग्राहक बनकर आए युवक के पिता या चाचा केतकी के पास जाते रहते हैं। इस कारण केतकी उस युवक को बेटे का स्थान देती है। उसके साथ यौन संबंध प्रस्थापित करने के लिए तैयार नहीं होती। अत: हम कह सकते हैं कि वेश्याएँ भी रिश्तों-नातों की ऊँचाई को मानती हैं। अपने भतिजे को वह बच्चे की तरह दुलारती है। प्यार करती है। प्यार से माथा चुमकर उसे कहती है - ``नाराज हो गए भतिजे ! जिस शरीर पर तुम मोहित हुए हो

बेटे, उसका रोम रोम पाप में लिथड़ा है। जिस नर्क कुंड में मैं डूबी हूँ, कौन मां चाहेगी कि उसका बेटा उसमें गिरकर रौरव यातना भोगे।``[107] अत: स्पष्ट है कि एक वेश्या होते हुए भी अपने पास शरीर पाने की लालसा से आए ग्राहक को बुराई के रास्ते पर जाने से सिर्फ इस कारण रोकती है कि इस युवक का चाचा उसके पास अपनी काम-तृप्ति करने के लिए आता रहता है। वह उसे समझाती है कि अच्छी सी लड़की देख कर उससे शादी करो और अपनी दिली इच्छा व्यक्त करती हुई कहती है - ``उस रात मैं इतना नाचू-गाऊंगी कि जीवन में आगे नाचने-गाने की तमन्ना ही न रहे।``[108] तात्पर्य, केतकी वेश्या होते हुए भी एक सुसंस्कृत तथा संवेदनशील नारी है। इसी कारण अपने धंधे का फायदा न देखते हुए एक युवक जिसको वह अपना भतिजा समझाती है। उसे समजाती है कि वेश्या के पास जाना बहुत बुरी आदत है।

सत्येंद्र शर्मा की कहानी `शट अप सर!` की कॉलगर्ल सरला जब ग्राहक के रूप में अपने अध्यापक को सामने पाती हैं तो उनके साथ यौन संबंध स्थापित करने से इन्कार करती है। वह कहती है - ``पर हमारे बीच एक भावना है सर ----टीचर एंड टॉट का नाता --- आप कोई-गैर-आदमी नहीं-----।``[109] तात्पर्य यह कि अपने गुरू-शिष्य के पवित्र रिश्ते की गरिमा पहचान कर तथा उसके उच्च स्थान को ध्यान में रखकर अपने अध्यापक की इच्छा के बावजूद उनके साथ यौन संबंध रखने से इन्कार करती है। जब अध्यापक अपनी इच्छा को पूर्ण करने पर अड़िग रहते हैं तो वह कहती है - ``धंधे के लिए मैंने कई आदमियों को खुश किया है और शायद अभी कुछ अरसा और भी करुंगी ----- मगर आप सिर्फ आदमी नहीं है---- आपको सामने पाकर उसे लगा कि ----- नहीं, नहीं, सर आप से मुझे ऐसी उम्मीद नहीं ---।``[110] वीरेंद्र जैन की कहानी `तुम मत आना` की लाजवंती जो कि एक वेश्या है। अपने मुहबोले देवर को बरबाद होने से बचाने के लिए तथा न आने की बिनती करती है। जैसे -``भगवान के लिए तुम अब कभी वहां मत आना मेरा वहाँ से आना नामुमकिन है। शायद तुम नहीं जानते। तुम्हारा दोस्त समीर भी ऐसे ही मनसूबे लेकर पहली-पहली बार उन सीढियों पर चढ़ा था पर आज ----।``[111] तात्पर्य यह कि लाजवंती का मुहबोला देवर उसे वेश्यावृत्ति जैसी गंदगी से निकालना चाहता है, परंतु लाजवंती जानती है कि उसे उस गंदगी से निकालने के प्रयास में वह खुद इस गंदगी में फंस जाएगा अत: वह नहीं चाहती की समीर की तरह उसके देवर को भी वेश्या का चश्का लगे और उसकी गंदगी बरबाद हो जाए।

निष्कर्ष रूपमें हम कह सकते हैं कि भले ही वेश्या धन संचय के लिए अपना जिस्म बेचती हो, परंतु उनमें भी रिश्तों नातों की कदर करने का जज्बा होता है। वे ये कभी नहीं चाहती की उनके

कारण तथा उन जैसी पेशेवर के कारण उनका अपना कोई बरबादी की राह पर चले। उनके जज्बाती रिश्ते के बंधन टूट जाये और उन रिश्तों को बदनाम होना पड़े।

वेश्या निर्मूलन उपाय तथा कठिनाइयाँ :-

कामांध पुरूषों की काम-पिपास बढ़ने के कारण अनेक युवतियाँ उनके मोह पाश में फंसकर वेश्यावृत्ति जैसे घृणित व्यवसाय को अपनाती हैं। इसी तरह निर्धनता के कारण मजबूर होकर नारी को वेश्या बनना पड़ता है। अत: वेश्यावृत्ति करनेवाली नारीयों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। इस समस्या की गंभीरता को देखते हुए कानून, समाजसेवी संस्था और व्यक्तिगत रूप से वेश्या निर्मूलन संस्थाओं द्वारा वेश्या निर्मूलन के प्रयास होते रहे हैं। इतने बड़े पैमाने पर वेश्या निर्मूलन के प्रयास होने पर भी सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक कठिनाइयों के कारण वेश्याओं का न निर्मूलन हुआ है और न ही वेश्यावृत्ति को बंद करने में किसी व्यक्ति, संस्था अथवा कानून को सफलता प्राप्त हुई है। वेश्या निर्मूलन के लिए जिस सरकार, संस्था व व्यक्ति ने प्रयत्न किए उनका संक्षिप्त परिचय निम्नांकित है।

(अ) वेश्या निर्मूलन उपाय :-

1. शासन, संस्था, व्यक्ति द्वारा उपाय योजना -

2. कहानियों में चित्रित उपाय योजना -

क. भारत सरकार तथा राज्य शासन द्वारा पारित उपाय :-

``भारत सरकार ने स्त्रियों तथा कन्याओं का अनैतिक व्यापार `निरोधक अधिनियम` पारित करके 1 मई, 1957 में इसे संपूर्ण देश में लागू कर दिया। इसके अनुसार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में वेश्यावृत्ति करना अथवा इसे प्रोत्साहन देना दण्डनीय अपराध घोषित किया गया।``[112] तात्पर्य, नारी को वेश्या बनानेवाले व्यक्ति के साथ वेश्यावृत्ति करनेवाली नारी को भी अपराधी घोषित किया।

देवदासी प्रथा निर्मूलन करने के लिए म्हैसूर शासन ने पहली बार ई.स. 1920 में कानून बनाया। इस `देवदासी` प्रथा के कारण अनेक युवतियाँ देवदासी बनती हैं। आगे चलकर उनका समावेश वेश्याओं में होता है। इसी बात को सामने रखकर सन 1934 ई. में. अंग्रेज सरकार ने देवदासी प्रतिबंध

कानून बनाया। इस कानून के द्वारा देवदासी बनानेवाले व्यक्ति तथा देवदासी को भी छ: महीने तक की सजा और 500 रू. जुर्माना इस प्रकार की सजा का प्रावधान किया। महाराष्ट्र सरकार ने भी व्यापक दृष्टिकोन अपनाकर इस समस्या पर ध्यान दिया।

ख. संस्था द्वारा पारित उपाय :-

धार्मिक कुप्रथा के कारण अनेक युवतियों को देवदासी बनना पड़ता था। आगे चलकर यही देवदासियाँ अपनी जीविका चलाने के लिए वेश्यावृत्ति करने लगती हैं। इसी बात पर गौर करने पर अनेक संस्थाओं ने `देवदासी` प्रथा बंद करने का प्रयास किया। इनमें प्रमुख है- `हिंदू युवती शरणलयम्` जिसकी स्थापना मद्रास में ई. स. 1922-23 में की गई। इसी उद्देश को लेकर गडहिंग्लज (महाराष्ट्र) में 20 सितंबर 1975 में पहली परिषद सम्पन्न हो गई। इसके बाद पूरे पांच साल के उपरांत 15 जून, 1980 में `महात्मा फुले प्रतिष्ठान` की ओर से परिषद का आयोजन किया। तात्पर्य यह की राज्यसरकार और भारत सरकार के साथ-साथ वेश्या निर्मूल करने के लिए कई संस्थाओं ने भी प्रयास किए हैं।

ग. व्यक्ति द्वारा किए गए उपाय :-

`देवदासी` प्रथा का अवलोकन करने के उपरांत उसकी गंभीरता को पहचान कर कुछ व्यक्तियों ने भी व्यक्तिगत रूप से देवदासी प्रथा का निर्मूलन करने का प्रयास किया है उनमें डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने `देवदासी` प्रथा नष्ट करने के लिए एक परिषद का आयोजन किया। ई. स. 1939 में `मलिवाड` के दलित समाज में मामलेदार श्री. कांबळे` अंधेरी में बडे पैमाने पर जलसों के द्वारा देवदासी प्रथा के भयंकर परिणाम समाज के सामने रख दिए।

इस प्रकार भारत सरकार, महाराष्ट्र सरकार तथा संस्था व व्यक्ति द्वारा वेश्या व देवदासी निर्मूलन करने के प्रयास किए गए। परंतु आज भी `देवदासी` जैसी धार्मिक कुरीति के कारण कई युवतियाँ पहले देवदासी और बाद में वेश्या बन जाती हैं।

उपर्युक्त विवेचन भारतीय समाज विज्ञान कोश भाग-तीन की पृष्ठसंख्या 81 के आधार पर किया गया है।

कहानियों में चित्रित उपाय :-

`सारिका` पत्रिका की आलोच्य कहानियों में लेखक द्वारा वेश्याओं के प्रति उदार दृष्टिकोन दिखाया गया है। और वेश्यावृत्ति बंद हो तथा वेश्याओं का निर्मूलन हो इस उद्देश से निम्नलिखित उपायों का संकेत अपनी कहानियों में दिया है।

क. वेश्या के साथ विवाह करना :-

अगर समाज से वेश्यावृत्ति को बंद करना है तो युवकों ने उनके साथ विवाह करना चाहिए। कुछ कहानीकारों ने इसी बात को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। जैसे सुभाष अखिल की कहानी `बाजारबंद` में शामें जरीना के साथ विवाह करता है, हरमन चौहान की कहानी `छाग` की गलकू लोगों द्वारा पीड़ित होती है। तथा उसके सामने वेश्यावृत्ति स्वीकारने के अलावा कोई चारा नहीं है, ऐसी स्थिति में लुकमान उसके साथ विवाह करता है। इसी प्रकार सआदत हसन मंटो ने `नरगीस` कहानी की वेश्या नरगीस को मकबूल ने सहारा दिया है। सत्येंद्र शर्मा ने अपनी कहानी `शट अप सर !` में वेश्याओं से ही आशा की है कि वे अपने-आप को उस गंदगी से निकालने की कोशिश करे। कहानी की नायिका सरला एक पायलट के साथ शादी करती है।

ख. वेश्या को किसी काम पर लगा देना :-

कई युवतियाँ वेश्या-व्यवसाय से उब जाती हैं। वह चाहती है कि इस व्यवसाय को छोड़कर कुछ मेहनत-मजदूरी करके अपना जीवन-यापन करे । परंतु वेश्या नारी को समाज घृणा की नजर से देखता है अत: उन्हें कोई काम पर भी नहीं रखता। शब्दकुमार की कहानी `डैड लाइन` की शीनी वेश्यावृत्ति को छोडकर फिल्मों में काम करना चाहती है परंतु उसके शरीर की ही माँग की जाती है। इस कारण शीनी इस व्यवसाय को छोड़ना नहीं चाहती। तात्पर्य यह कि इस धंधे से ऊब जाने पर कोई वेश्या अगर अच्छा काम करके अपना जीवन-यापन करने का प्रयास करे तो उसके लायक कोई अच्छा-सा काम देकर उसकी मदद करनी चाहिए इसी बात की ओर कहानीकार ने संकेत किया है।

ग. ग्राहकों की सहृदयता :-

माता-पिता की निर्धनता के कारण तथा उनके द्वारा लड़कियों की जरूरतों पर ध्यान न देने के कारण किसी के बहकावे में आकर ये लडकियाँ वेश्यावृत्ति करने लगती हैं। ऐसी लड़कियाँ इस व्यवसाय को पूर्ण रूप से नहीं अपनाती। समय रहते अगर इनको समझा-बुझाकर इस व्यवसाय से अलग करने का प्रयास किया जाए तो ये लड़कियाँ इस व्यवसाय को छोड़ देती हैं। जसवीर चावला ने `फ्रॉक का रंग` कहानी में एक सहृदय ग्राहक का चुनाव किया है। जो कि एक बाल वेश्या को बेटी समझता है। यशपाल वैद की कहानी `स्थितियाँ` में कथा नायिका के पास गया ग्राहक उसे बेटी की तरह समझता है। और उसे इस धंधे को न करने की सलाह देता है।वेश्या जब भावविवश होती है और उसे अंकल कहती है तो ग्राहक कहता है - ``हां मैं तुम्हारा अभागा अंकल हूँ। और तुम मेरी अभागी बेटी।``[113] सहृदय ग्राहकों के समझाने पर लड़कियाँ वेश्यावृत्ति छोड़ सकती है इसी बात की ओर कहानीकार ने संकेत किया है।

घ. समाज से बहिष्कृत करना :-

कुछ असामाजिक प्रवृत्ति के लोग वेश्या नारी को समाज से बाहर निकालने के पक्ष में होते हैं। वेश्या नारी को पीडित तथा प्रताडित करके समाज से बहिष्कृत कर देना चाहते हैं। राकेश कपुर द्वारा लिखी कहानी `जरीना` में जरीना को समाज से बाहर निकालने के लिए `रंडी बाजर का उद्धार` संस्था की स्थापना की जाती है। कानून की मदत मिले इस उद्देश्य से संस्था के मुखिया केलाजी भूख हड़ताल करते हैं। कहानी के अंत में दरोगा जरीना के चेहरे पर तेजाब फेंककर जला देता है। चेहरा जलने के बाद जरीना दूर कही चली जाती है। लेखक द्वारा बताए इस उपाय के द्वारा वेश्या जरीना शहर से तो चली जाती है परंतु इंसानियत का विचार किया जाय तो लेखक का यह सुझाव गलत है। यहाँ लेखक वेश्यावृत्ति निर्मूलन करने का समाधान प्रस्तुत करने में असफल हुए हैं।

ङ. अन्य कई सुझाव :-

रमेश बत्तरा ने `चकले का चरित्र` कहानी में वेश्यावृत्ति निर्मूलन के लिए कुछ उपाय सुझाएँ हैं। जैसे -

1. वेश्याओं को दलित वर्ग की श्रेणी में रखकर उन्हें वैसी ही सुविधाएँ प्रदान की जायें।

2. वेश्याओं के उन्मूलन हेतु जो भी संस्थाएँ काम करती हो उन संस्था में वेश्याओं का भी समावेश किया जाएँ ताकि वे अपनी व्यथा सुनाएँ तथा और वेश्याओं को भी सुधारने का प्रयास करे।

3. वेश्यागामी पुरूषों को पकड़कर उन्हें तगड़ा जुरमाना और सख्त सजा दी जाये।

4. सरकार और जनता की मदत से एक सुधार गृह खोलकर उसमें वेश्याओं को पढ़ाया और काम सीखाया जाये।

5. पुलिस को इस मामले में न्यायाधीश वाले अधिकार दे दिये जाये।

6. हमारे देश में साधू और वेश्याओं की संख्या लगभग बराबर है अत: प्रत्येक साधु का एक वेश्या के साथ ब्याह किया जाये।

7. सरकार को चाहिए कि वह चकलों का प्रबंध अपने हाथों में ले ले और वेश्याओं को सरकारी कर्मचारियों की भांति वेतन तथा भत्ता आदि दे।

8. हर शहर में वेश्या बाजार शहर से बाहर बनवा दिये जायें।

9. वेश्यावृत्ति छोडने के लिए वेश्याओं को प्रेरणा की जरूरत है। इसके लिए जरूरी है कि हम लोग उनसे रिश्ता जोडे। राष्ट्रपति, मंत्री आदि वेश्याओं के पास जाकर उनसे राखी बंधवाएँ ---हमारी प्रधानमंत्री और अन्य स्त्रियाँ जाकर उनके बेटों को राखी बांधें।

10. शिक्षा का प्रभाव बहुत गहरे तक पैठता है। अत: इन वेश्याओं को पढ़ाया-लिखाया जाये।

11. युवकों को वेश्याओं के साथ विवाह करना चाहिए और जहाँ यह नहीं होगा वह परिवार एक वेश्या को अपने घर में शरण दे।

12. वेश्याओं के परिवार के बारे में सोचना चाहिए। उन्हें जमीन, घर मुहय्या करना चाहिए। बाद में वेश्याएँ अपने-आप घर चली जाएगी।

(आ) उपस्थित कठिनाइयाँ :-

वेश्यावृत्ति निर्मूलन हेतु सुझाए गए सुझावों को कार्यरूप में लाने में अनेक कठिनाइयाँ सामने आती हैं। इन कठिनाइयों का विवेचन प्रस्तुत है -

1. वेश्या नारी के साथ कोई विवाह नहीं करता। फिर भी कोई सहृदय व्यक्ति इनसे विवाह करने के लिए तैयार भी हो जाए तो समाज उसे स्वीकृति नहीं देता। उस पर अत्याचार करता है।

2. कानून के मुहाफिज रिश्वत लेकर वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देते हैं, अत: कानून द्वारा वेश्यावृत्ति निर्मूलन के लिए बनाए गए नियमों का कोई फायदा नहीं होता।

3. कोठे पर वेश्यावृत्ति करनेवाली वेश्याओं का उद्धार गुंड प्रवृत्ति के लोगों के कारण नहीं होता। इन लोगों के साथ कोई भी शरिफ आदमी झगड़ा नहीं करता। अत: इन गुंड प्रवृत्ति के लोगों के कारण वेश्या निर्मूलन करने में कठिनाइयाँ आती हैं।

4. कोई भी इज्जतदार आदमी अपने यहाँ वेश्या को नौकरी नहीं देता। इस कारण भी वेश्या को `वेश्यावृत्ति` को ही चलाना पड़ता है।

5. धनार्जन की लालसा पूर्ति हेतु जिन लडकियों ने कम समय में जादा धन कमाने के लिए वेश्यावृत्ति को अपनाया हैं वे लड़कियाँ इस व्यवसाय को छोड़ना नहीं चाहती। इस बारे में शब्दकुमार की कहानी ढैड लाइन की शीमी का कथन है - ``मेरी बात पर विश्वास न हो तो फारस रोड में उन औरतों से कहिए कि वह अपना धंधा छोड दें, उन्हें इज्जत का काम दिलाया जाएगा-----देखिए कितनी औरतें अपना पेशा छोड़ आपके साथ आती हैं। कुछ बूढ़ी औरतों को छोड़कर, जिन्हें अब इस काम में कुछ नहीं मिलता, बहुत कम अपने साथ आने को तैयार होगी।``[114] तात्पर्य धन की लालच में जवान वेश्याएँ वेश्यावृत्ति छोडने के लिए तैयार नहीं होती।

6. वेश्यावृत्ति करनेवाली नारी खुद को किसी की पत्नी बनने के काबिल नहीं समझती। अपनी आजाद तबियत को वह किसी परिधि में बांधने में खुद को असमर्थ समझती है। शीनी कहती है - ``अपने भीतर झांककर देखा कि पत्नी का जीवन मेरे लिए नहीं, मेरी आजाद तबियत मुझे किसी घेरे में बंद

होकर नहीं रहने देगी।``[115] तात्पर्य वेश्या की आज़ाद प्रवृत्ति भी वेश्या-निर्मूलन कार्य में समस्या पैदा करती है।

7. वेश्यावृत्ति से परावृत्त करने पर उन औरतों की समाज की किस श्रेणी में रखा जाए व उनकी जीविकार्जन के लिए उन्हें किस कार्य में लगा दिया जाए यह भी कठिनाई सामने आती है। क्योंकि समाज की कोई भी श्रेणी यह नहीं चाहेगी कि वेश्या को उनकी श्रेणी में रखा जाए।

8. वेश्यावृत्ति सुधारने हेतु कोई सह्रदय व्यक्ति कार्य करने लगे, तो समाज का उसकी तरफ देखने का दृष्टिकोण बदल जाता है। समाज में उसकी और उसके कार्य की आलोचना की जाती है।अत: कोई भी संवेदनशील व्यक्ति इस कार्य को अंजाम देने के उद्देश्य से आगे नहीं बढ़ता।

9. समाज में रहनेवाले कुछ सुधारवादी प्रवृत्ति के लोग वेश्यावृत्ति का होना समाज में आवश्यक मानते हैं। इनके अनुसार अगर वेश्यावृत्ति को बंद कर दिया जाय तो समाज की इज्जतदार औरतों का घर से बाहर निकलना मुश्किल होगा। बलात्कार के प्रमाण में वृद्धि होगी।

तात्पर्य कानून, संस्था, व्यक्ति के द्वारा वेश्या निर्मूलन के लिए जिन उपायों का प्रयोग किया, उनके सामने उपर्युक्त कठिनाइयाँ प्रस्तुत हुई। और आज तक इतने सारे प्रयासों के बावजूद भी न तो समाज से वेश्यावृत्ति हट गई है और न उसका निर्मूलन हुआ है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि वेश्यावृतित बहुत ही प्राचीन व्यवसाय है। प्राचीन काल में वेश्याओं के दो प्रकार सामने आते हैं। एक गणिका, जो राजा-महाराजाओं के दरबार में अपनी कला के बलबुते पर स्थान प्राप्त करती थी। दूसरी वारयोशिता जो अपना तन बेचकर अपना जीवन-यापन करती थी। इन वेश्याओं के व्यवसाय पर राजाओं का नियंत्रण होता था। अत: उस समय के वेश्यावृत्ति में भी नैतिकता देखने को मिलती है।

मध्ययुग में वेश्याओं की संख्या बढ़ने के कारण शासकों का नियंत्रण ढीला हो गया था। परिणामत: वेश्या छलकपट का प्रयोग कर ग्राहकों की लूट करती थी। मध्यकाल में सभी गणिकाओं को

राजाश्रय प्राप्त नहीं होता था अत: इन गणिकाओं को धनार्जन करने के लिए वारयोशिताओं की तरह शरीर-विक्रय करना पड़ा। इसी के कारण देह-व्यापार करनेवाली वेश्याओं की संख्या में वृद्धि हो गई।

आधुनिक काल में वेश्याओं की संख्या में महाराष्ट्र, कर्नाटक की देवदासियों के कारण बहुत बड़ी मात्रा में वृद्धि हो गई। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप देहातों से महानगरों की ओर काम-काज की तलाश में चले आ रहे पुरूषों के कारण वेश्याओं की वृद्धि हुई नजर आती है। नगरों में जगह की समस्या होने के कारण मनुष्य अपने परिवार को साथ नहीं रख सकता। अत: उसकी नैसर्गिक कामेच्छा की तृप्ति के लिए उसे वेश्या के पास जाना पड़ता है। इन जैसे देहातों से नगरों में आनेवाले पुरूषों के कारण वेश्याओं की मांग बढ़ गई। अत: कम समय में जादा-से-जादा धन कमाने की लालसा पालनेवाली नारी वेश्या व्यवसाय की ओर आकर्षित होने लगी।

वेश्यावृत्ति का मूल कारण पुरूषों की काम-वासना ही मानना होगा क्योंकि घर में बीबी से लैंगिक सुख प्राप्त न होने के कारण पुरूष अन्य मार्ग की तलाश करता है। इन पुरूषों की तलाश वेश्या के पास ही आकर खत्म होती है। अत: स्पष्ट है कि स्त्री को वेश्यावृत्ति का स्वीकार करवाने के पिछे पुरूषों की काम-वासना ही है। वैसे कोई भी नारी स्वेच्छा से इस घृणित व्यवसाय को नहीं अपनाती। स्त्री को वेश्या बनने के लिए मजबूर करनेवाले कारणों में आर्थिक कारण सबसे प्रभावी है। आर्थिक दृष्टि से पराधीन नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने के लिए वेश्यावृत्ति स्वीकारती है। नौकरी करनेवाली नारी को नौकरी पाने के लिए तथा मिली हुई नौकरी को स्थाई बनाने के लिए वेश्या की तरह अपने आधिकारियों को खुश करना पड़ता है।

वेश्यावृत्ति के स्वरूप को ध्यान में रखकर वेश्याओं को जिन कोटि में विभाजित किया है उनमें कोठे की वेश्या का जीवन अत्यंत दीन, हीन होता है। अन्य कोटि की वेश्याओं की तरह उन्हें किसी भी प्रकार का स्वातंत्र्य नहीं होता। इन वेश्याओं के सामने वेश्या व्यवसाय करते समय अनेक कठिनाइयाँ आती हैं।

वेश्यावृत्ति को खत्म करने के लिए शासन, संस्था तथा व्यक्तिगत रूप में जितने भी प्रयास किए उनमें से किसी को भी वेश्यावृत्ति बंद करने में या वेश्या निर्मूलन करने में सफलता प्राप्त नहीं हुई। इसका कारण यह कि समाज द्वारा इन्हें घृणित समझा जाता है और उन्हें समाज किसी भी रूप में

स्वीकार नहीं करता। सभी वेश्याएँ धन के पिछे भागनेवाली नहीं होती उनमें से कुछ ऐसी भी होती हैं जो ग्राहकों को सही रास्ता दिखाती हैं। इससे वेश्या नारी के उंचे प्रतिमान का पता चलता है। प्रत्येक नारी वेश्या नहीं होती परंतु प्रत्येक वेश्या नारी होती है।

: संदर्भ सूची :

1. सं. नगेंद्रनाथ वसु -हिंदी विश्वकोश, भाग-22, पृ. 257
2. डॉ. हरदेव बाहरी - राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृ. 760
3. सं. श्यामसुंदरदास - हिंदी शब्दसागर (नवाँ भाग), पृ. 4612
4. सं. रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश (पंचम खंड), पृ. 116
5. वहीं, वही, पृ. 116
6. श्री. नवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ. 1303
7. सं. पं. महादेवशास्त्री जोशी - भारतीय संस्कृति कोश (नववां खंड), पृ. 103
8. डॉ. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 195
9. वहीं, वहीं, पृ. 195
10. सं. महादेवशास्त्री जोशी- भारतीय संस्कृति कोश (दूसरा खंड), पृ. 724
11. वहीं, वहीं, पृ. 724
12. वहीं, वहीं, पृ. 724
13. वहीं, भारतीय संस्कृति कोश (नववां खंड) , पृ. 103
14. वहीं, वहीं, पृ. 104
15. वहीं, वहीं, पृ. 104
16. वहीं, वहीं, पृ. 103
17. वहीं, वहीं, पृ. 104
18. वहीं, वहीं, पृ. 104
19. वहीं, वहीं, पृ. 104
20. सं. महादेवशास्त्री जोशी - भारतीय संस्कृति कोश (नववाँ खंड), पृ. 106
21. सं. स. मा. गर्गे - भारतीय समाजविज्ञान कोश (तीसरा खंड), पृ. 79
22. सं. श्याम अग्रवाल - संध्यानंद, मंगल, 3 नवंबर 1998, वर्ष :6, अंक 77, पृ. 2
23. सं. महादेवशास्त्री जोशी - भारतीय संस्कृति कोश (नववां खंड), पृ. 104
24. डॉ. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 204

25. डॉ. शकुंतला चव्हाण - यशपाल साहित्य में कामचेतना, पृ. 75

26. सत्येंद्र शर्मा - शट अप सर !, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-दो , पृ. 63

(वर्ष : 22, अंक : 316)

27. वहीं, वहीं, पृ. 63

28. विभांशु दिव्याल - प्रेमिका, समुद्र और वह लड़की, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा-विशेषांक-तीन

(वर्ष :22, अंक : 317) पृ. 62

29. बीर राजा - बदकार, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार, पृ. 47

(वर्ष : 22, अंक : 340)

30. वहीं, वहीं, पृ. 47

31. शब्दकुमार - डैड लाईन, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-तीन, पृ. 40

(वर्ष : 22, अंक : 317)

32. वहीं, वहीं, पृ. 40

33. वहीं, वहीं, पृ. 40

34. वहीं, वहीं, पृ. 41

35. अशोक गुप्ता - काली खुशबू का फूल, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-दो, पृ. 35

(वर्ष : 22, अंक : 316)

36. वहीं, वहीं, पृ. 36

37. वहीं, वहीं, पृ. 36

38. वहीं, वहीं, पृ. 36

39. वहीं, वहीं, पृ. 35

40. रामदरश मिश्र - हद से हद तक , `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 35

(वर्ष : 22, अंक :323)

41. सआदत हसन मंटो - `इस्मतफरोशी, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार, पृ. 14

(वर्ष : 23, अंक : 340)

42. वहीं, वहीं, पृ. 14

43. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 202

44. वहीं, वहीं, पृ. 202

45. सुभाष अखिल- बाजार बंद, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-एक, पृ. 19

(वर्ष : 22, अंक : 315)

46. सत्येंद्र शर्मा - शट अप सर !, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-दो, पृ. 63

(वर्ष : 22, अंक : 316)

47. वहीं, वहीं, पृ. 63

48. जसबीर चावला - फ्रॉक का रंग, `सारिका` देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार, पृ. 41

(वर्ष : 23, अंक : 340)

49. वहीं, वहीं, पृ . 40

50. बीर राजा - बदकार, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार, पृ. 47

(वर्ष : 23, अंक : 340)

51. राकेश तीवारी- बाबू के लिए, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 31

(वर्ष : 23, अंक : 341)

52. यशपाल वैद - स्थितियाँ, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 67

(वर्ष : 23, अंक : 341)

53. वहीं, वहीं, पृ. 67

54. रमेश बत्तरा - चकले का चरित्र, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 90

(वर्ष : 23, अंक : 341)

55. सुनंत कौर - समकालीन हिंदी कहानी स्त्री पुरूष संबंध, पृ. 153

56. सं. स. मा. गर्गे - भारतीय समाजविज्ञान कोश (तीसरा खंड), पृ. 77

57. यशपाल - मैं वेश्या बनूंगी, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार, पृ. 17

(वर्ष : 23, अंक : 340)

58. वहीं, वहीं, पृ. 17

59. अबिद सुरती - जहां भाजी-मूली के दाम बच्चे बिकते हैं!, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-एक, (वर्ष : 22, अंक : 315), पृ. 13

60. राजन पाराशर - प्राचीन काल में वेश्या होना कितना मुश्किल था, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-तीन (वर्ष : 22, अंक : 317), पृ. 29

61. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 197

62. वीरेंद्र जैन - तुम मत आना, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 51 (वर्ष : 23, अंक : 341)

63. वहीं, वहीं, पृ. 50

64. वीरेंद्र जैन - तुम मत आना, `सारिका` देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 50 (वर्ष : 23, अंक : 341)

65. रमेश बत्तरा - चकले का चरित्र, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 90 (वर्ष : 23, अंक : 341)

66. वहीं, वहीं, पृ. 91/92

67. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 197

68. सत्येंद्र शर्मा - शट अप सर !, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-दो, पृ. 62 (वर्ष : 22, अंक : 316)

69. वही, वही, पृ. 65

70. सआदत हसन मंटो - नरगिस, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-एक, पृ. 23 (वर्ष : 22, अंक : 315)

71. विभांशु दिव्याल - प्रेमिका, समुद्र और वह लड़की, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-तीन (वर्ष : 22, अंक : 317) पृ. 58

72. सआदत हसन मंटो - नरगिस, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-एक, पृ. 23 (वर्ष : 22, अंक :315)

73. विभांशु दिव्याल - प्रेमिका, समुद्र और वह लड़की, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-तीन, (वर्ष : 22, अंक : 317) पृ. 59

74. अशोक गुप्ता - काली खुशबू का फूल, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-दो, पृ. 36

(वर्ष : 22, अंक : 316)

75. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 198

76. राकेश तिवारी - बाबू के लिए, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 31

(वर्ष : 23, अंक : 341)

77. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों मे नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 198

78. प्रदीप अग्रवाल - ठंढ़ा गोश्त, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 70

(वर्ष : 23, अंक : 341)

79. राकेश कपुर - जरीना, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-एक, पृ. 40

(वर्ष : 22, अंक : 315)

80. वहीं, वहीं, पृ. 41

81. वहीं, वहीं, पृ. 41

82. वहीं, वहीं, पृ. 41

83. सआदत हसन मंटो - ईदन, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 37

(वर्ष : 23, अंक : 341)

84. वहीं, वहीं, पृ. 38

85. वहीं, वहीं, पृ. 38

86. राकेश कपुर - जरीना, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-एक, पृ. 39

(वर्ष : 22, अंक : 315)

87. वहीं, वहीं, पृ. 40

88. राधेश्याम - बाजार, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-तीन, पृ. 77

(वर्ष : 22, अंक : 317)

89. नेल्सन एल्ग्रेन - तुम्हारी चाहत बस एक रात की, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार

(वर्ष : 23, अंक : 340) पृ. 19

90. वहीं, वहीं, पृ. 19

91. नेल्सन एल्ग्रेन - तुम्हारी चाहत बस एक रात की, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार

(वर्ष : 23, अंक : 340) पृ. 20

92. सुभाष अखिल - बाजार बंद, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-एक, पृ. 19

(वर्ष : 22, अंक : 315)

93. राधेश्याम - बाजार, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-तीन, पृ. 76

(वर्ष : 22, अंक : 317)

94. सुभाष अखिल -बाजार बंद, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-एक, पृ. 20

(वर्ष : 22, अंक : 315)

95. नेल्सन एल्ग्रेन - तुम्हारी चाहत बस एक रात की, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार, पृ. 18

(वर्ष : 23, अंक : 340)

96. रमेश बत्तरा - चकले का चरित्र, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 91

(वर्ष : 23, अंक : 341)

97. नेल्सन एल्ग्रेन - तुम्हारी चाहत बस एक रात की, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार

(वर्ष : 23, अंक : 340) पृ. 18

98. सुभाष अखिल - बाजार बंद, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-एक, पृ. 18

(वर्ष : 22, अंक : 315)

99. वहीं, वहीं, पृ.

100. सआदत हसन मंटो - ईदन, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 38

(वर्ष : 23, अंक : 341)

101. नेल्सन एल्ग्रेन - तुम्हारी चाहत बस एक रात की, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार,

(वर्ष : 23, अंक : 340) पृ. 20

102. रमेश बत्तरा - चकले का चरित्र, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 91

(वर्ष : 23, अंक : 341)

103. गुड्डू गोविंद - एक सर्वेक्षण, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 73

(वर्ष : 23, अंक : 341)

104. श्रीकांत शर्मा - परिचर्चा (आ मौत मुझे मार), `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच,
(वर्ष : 23, अंक : 341) पृ. 28

105. सागर सरहदी - हमपेशा, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-तीन, पृ. 47
(वर्ष : 22, अंक : 317)

106. बलबीर त्यागी - केतकी, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-दोन, पृ.66
(वर्ष : 22, अंक : 316)

107. वहीं, वहीं, पृ. 66

108. वहीं, वहीं, पृ. 66

109. सत्येंद्र शर्मा - शट अप सर !, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-दो, पृ. 65
(वर्ष : 22, अंक : 316)

110. वहीं, वहीं, पृ. 65

111. वीरेंद्र जैन - तुम मत आना, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 52
(वर्ष : 23, अंक : 341)

112. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्या, पृ. 204

113. यशपाल वैद - स्थितियाँ, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-पांच, पृ. 67
(वर्ष : 23, अंक : 341)

114. शब्दकुमार - डैड लाईन, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-तीन, पृ. 41
(वर्ष : 22, अंक : 317)

115. वहीं, वहीं, पृ. 41

****